पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से

पं० अनन्तराम और माठे के सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालय

देहली में छपा।

वन्दे वीरम्

॥ श्रीमद्विजयानन्दसूरिभ्यो नमः ॥

सदाचार रक्षा

प्रथम भाग

ट्रेक्ट नंबर ४

लेखक

सेठ जवाहरलाल जैनी

सिकन्दराबाद जिला बुलन्दशहर

यू. पी. प्रान्त

प्रकटकर्त्ता

श्रीआत्मानंद जैन पुस्तक प्रचारक मंडल

नौघरा–देहली.

वीर संवत् २४४३	द्रव्य त्यागियों	आत्मसंवत २१
विक्र० संवत् १९७४	को भेट	ईसवीसन् १९१७

द्वितीय वार १००० मूल्य ।-)

निवेदन ।

सज्जनो !

प्रायः करके हमारे देशवासी अनेक कुचालों द्वारा वृथा वीर्य नष्ट कर संसार में व्यभिचार फैला रहे हैं और उनकी देखा देखी जो सुशील स्त्री पुरुष हैं उन पर भी खोटा प्रभाव पड़ रहा है। देश की यह भयंकर दशा देख मेरे से चुप न रहा गया और उन कुप्रथाओं की रोक के लिये यह छोटा सा ट्रैक्ट अपनी अल्प बुद्धि अनुसार लिख आप की सेवा में समर्पित किया जिसको आद्योपान्त अवलोकन करने से आपको विदित हो जावेगा कि देश में क्या २ कुचालें फैल रही हैं कि जिनके द्वारा व्यभिचार दिनों दिन उन्नति कर रहा है। आशा है कि आप इन कुचालों पर विचार कर इनकी रोक में दत्तचित्त होंगे और जो कुचाल मीमांसा करने से रह गई हों उसकी मुझे सूचना देंगे, जो दूसरे भाग में उस पर भी विचार किया जा सके। यह लेख किसी धर्म की आड़ में नहीं लिखा गया है परन्तु देशहित सभी धर्मों की

भलाई निमित्त (सोशीयलरिफार्म तरीके से) लिखा गया है। यदि इस में कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे सुधार कर पढ़ें और मुझको सूचना दें जो आगामी बार में सुधार होसके।

निवेदक—जवाहरलाल जैनी
सिकन्दराबाद यू० पी०
जिला बुलन्दशहर.

विषय--सूची

वन्दे वीरम् ।

सदाचार रक्षा

अपर नाम

व्यभिचार की रोक

प्रियवर महाशयो !

विचित्र समय है । कलियुग पंचम काल ने अपना पूरा ही सिक्का जमाया है, धर्म कर्म सब डुबोया है । पाप का झंडा उठाया है, व्यभिचार ने खूब ही हाथ पैर फैलाया है, जिधर देखो उधर ही अन्धेर छाया है । न जैन कालिज, न जैन यूनिवर्सिटी, न संस्कृत पढ़ने के साधन, न अनाथालय, न पुस्तकालय, न योग्य समाचार पत्र; न उपदेशकों की भरमार है, न धनाढ्यता, न व्यापार न कार्यदक्षता, न शिल्पकारी, न वाणिज्य, न पदार्थ-विद्या, न यान्त्रिक विद्या. जिधर देखो उधर ही सफ़ाया है ।

जब समस्त देश क्या इग्लेंड, क्या जर्मन, फ्रांस, इटली, आस्ट्रिया, अमरीका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, रूम, रूस, काबुल

चीन, जापान दिन रात दमादम उन्नति कर रहे हैं। नित्य नवीन शोध खोज हो रही है। किसी ने रेल बनाई तो किसी ने तार चलाया, किसी ने मोटर बनाई तो अब किसी ने हवाई जहाज़ वायुयान (आकाशगामी विमान) ही बना दिया। अभिप्राय यह कि नित्य नवीन वस्तुएं आविष्कृत होती हैं तो हमारे देश में यह क्या, बहुतसी विद्याएं होते हुए भी सब भूल बैठे हैं, नवीन शोध खोज तो क्या कर सकते हैं वह मस्तिष्कों में बल ही नहीं है जो किसी गहन बात का विचार कर सकें। जिधर देखो उधर ही मस्तक पर हाथ है।

बच्चा बाल्य अवस्था की सीमा पार कर युवा अवस्था में आया ही नहीं कि जिसके पूर्व ही कहता है कि सिर में पीड़ा है, टांगों में बिछनी है, हाथों में हड़कल है, स्कूल से आये कि थक गये, बहुत तो तेली के बैल बने फिरते हैं दीखता ही नहीं, चश्मे तक के आधीन हैं।

मित्रवर ! कीजिये विचार, क्या यह सन्तानें नवीन खोज करेंगी या किसी बात को नवीन आविष्कृत कर दिखावेंगी-भला जिनके खिचड़ा खाते पौंचा उतरते हैं,

छींकते ही मस्तक भिन्नाता है भला उनसे कुछ देशोन्नति की आशा की जा सकती है ? अहो कहां है वह पुरुषार्थ ? कहां हैं श्रीमान् बाहुबल जी द्रोणाचार्य भीष्मपितामह भीम अर्जुन जैसे योद्धा कि जिन के बल से पृथ्वी भर के मनुष्य मात्र थर्राते थे । और लक्षों कटक में समर करते हुए आहत होने पर आह तक नहीं करते थे और कहां आज के जन्टलमैन तनक लगी धूप और गुलाब के फूल की भांति कुमला गये । कहां हैं हमारे कलिकाल सर्वज्ञ पद के धारक जैनाचार्य, श्रीमान् हेमचन्द्राचार्य्य हरिभद्रसूरि भद्रबाहु स्वामी, सिद्ध सैन दिवाकर और स्थूलभद्र जैसे धर्मधुरन्धर कि जिन्होंने इतनी शोध खोज की है कि जिनके आगे फिलासफ़ी और लोज़िक पानी भरती है । हर विषय के ग्रंथों के मारे भारत में वह भरमार करदी थी कि देखने पढ़ने वाले दंग रह गये थे कि जिसको आजकल यहां क्या यूरुप तक के विद्वान् सर्वज्ञ की उपाधि प्रदान कर मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं । कहां वह मस्तिष्की बल और कहां आजकल का नवीन चमत्कार जो स्कूलों की पढ़ाई पढने में भी प्रति-

दिन औषधि खाकर ही मस्तिष्क ठीक रखना पड़ता है।
जिस पर भी तुर्रा यह है कि साल भर में तीन महीने
तो अनुपस्थिति (ग़ैरहाज़िरी) अवश्य ही होती है फिर भी
शिकायत शेष है कि आज तबियत ठीक नहीं, आज आँखों
के आगे पढ़ते २ कांच से आगये अब उष्णता अधिक पड़ती
है पढ़ा नहीं जाता। आज तो भोजन ही नहीं पचता
अभिप्राय कि प्रतिदिन यही झींकने रहते हैं।

कीजिये विचार क्या कारण है जो इतनी निर्बलता
आगई कहां वे योद्धा और विद्वान् और कहां आज हमारी
और आपकी दशा ? क्या कारण है जो इतनी निर्बलता
छागई ? प्यारे मित्रो ! यदि विचार किया जाता है तो प्रत्यक्ष
प्रमाणित होता है कि पहिले पुरुष ब्रह्मचर्य पालते थे वीर्य
की रक्षा करते थे व्यभिचार के पास तक नहीं फटकते थे
यहां तक कि राजा लोग व्यभिचारी का लिंगच्छेदन करा
देशसे निकाल देते थे। स्त्री का भी काला मुख करके सरकारी
आदमियों के साथ नगर में फिरा कर नगर से निकाल दी
जाती थीं और यही जैन का सिद्धान्त है क्योंकि अर्हन्नीत
पृष्ठ २११ में लिखा है:—

वर्णत्रयेषु यः कश्चित् सेवेत ब्राह्मणो यदि ।
छित्त्वा लिङ्गं महीपस्तं देशान्निर्वासयेत्त्वरम् ॥ ९ ॥
ब्राह्मणीमपि कृष्णास्यां कारयित्वा च भ्रामयेत् ।
पुरे स्वानुचरैर्भूपः पुनर्निष्कासयेद्बहिः ॥ १० ॥

यही कारण था कि पहली सन्तान योद्धा, शूरवीर और धर्मज्ञ होती थीं और वह मस्तिष्क में बल था कि एक क्या सहस्रों वस्तुएं आविष्कृत करदीं और आगे को इतने ग्रन्थ बना कर धर गये कि यदि मुसलमानों के आक्रमण में नष्ट न होते तो न मालूम कितना अब पृथ्वी में उनका प्रकाश हो जाता। शायद ही अब के विद्वानों को नवीन शोध खोज की आवश्यकता पड़ती।

मित्रवरो ! इस एक वीर्य की रक्षा न होने से इस देश का सर्वस्व नष्ट होगया। शरीर में निर्बलता छागई, रंग पीला पड़ गया, आयु घट गई, वीरता जाती रही, घुटनों में दम नहीं रहा, पुरुषार्थ की समाप्ति होगयी कहां तक गिनाऊं जो कुछ त्रुटि दीखती है इसीका प्रताप है। कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमान् हेमचन्द्र सूरि ने योगशास्त्र के द्वितीय प्रकाश के पृष्ट २१० में कहा है:—

चिरायुषः सुसंस्थाना दृढ़संहनना नराः ।
तेजस्विनो महावीर्या भवेयुर्ब्रह्मचर्यतः ॥ १०६ ॥

अर्थः—मनुष्य ब्रह्मचर्य के प्रभाव से बड़ी अवस्था वाले सुन्दर स्वरूप, दृढ़ (मज़बूत) अंगों से युक्त, तेजस्वी और बड़े पराक्रमी होजाते हैं ।

पाठकवर्ग ! विचार कीजिये कि जब इसी ब्रह्मचर्य्यव्रत के पालने से सारा सुधार होता है तो क्यों नहीं शीघ्र इसका सुधार किया जाता है. क्योंकि जो मनुष्य ब्रह्मचर्य व्रत को पालता है वह इन सब त्रुटियों को पूरा करने के अतिरिक्त पूजनीय करके भी पुजता है । यही योगशास्त्र में श्रीमान् हेमचन्द्र सूरि फ़रमाते हैं:—

प्राणभूतं चरित्रस्य परब्रह्मैककारणम् ॥
समाचरन् ब्रह्मचर्यं पूजितैरपि पूज्यते ॥ १०५ ॥

अर्थ—जो मनुष्य सच्चरित्र के प्राणरूप, परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के मुख्य कारण ब्रह्मचर्यका पालन करता है वह पूजनीय महान् पुरुषों से भी सत्कार पाता है।

देखिये मित्र ! इस से बढ़कर क्या मान मिल सकता है, जब इस व्रत के धारण करने से अनेक लाभ प्रत्यक्ष

और परोक्ष हैं तो नहीं मालूम हमारे भाई क्यों नहीं इसको परित्याग करते। वे अभी तक अपनी तान में ही मस्त हैं। चाल ढाल ही निराली है, दिन प्रति दिन निर्वलता घेरती जाती है, हर प्रकार से दरिद्री बनते जाते हैं परंच यह नहीं कि कुछ जातीय उन्नति, धर्मोन्नति, देशोन्नति, के उपाय सोचे जावें। सोचें कहां से ? वह योग्यता ही नहीं मस्तिष्कों में बल ही नहीं जिन के द्वारा नवीन खोज कर कोई बात नवीन आविष्कृत की जावे, देशोपकार में चेष्टा की जावे, धर्म की रक्षा की जावे, परन्तु यह योग्यता होवे कहां से विना ब्रह्मचर्य, कि जिसके वास्ते जैनसिद्धान्तों में साधु वा श्रावक सभी के वास्ते चौथा व्रत विस्तारपूर्वक बताया है, पालन न किया जावे। परन्तु यहां तो इस के प्रतिकूल व्यभिचार की अग्नि भड़क रही है, और यह रोग इतना वढ़ गया कि देश ही खो बैठे। और रात दिन इस की उन्नति कर रहे हैं, चाहे देश क्या अपना भी घर लुट लुटा कर नष्ट होजावे। आज सुख चैन सब कुछ है और कल चाहे भीख ही मांगनी पड़े। कुछ चिन्ता नहीं, अपने नशे में मस्त हैं। मेरी सम्मति में प्रतिशत ७५ के लग-

भग इसी रोग में ग्रसित हैं। जब कि ब्रह्मचर्य की रोक न होकर कच्चा ही वीर्य वृथा जाता है और रात दिन इसका ही सफ़ाया है तो भला पूर्व पुरुषों के नाईं मस्तिष्क में बलिष्ठता कहां से आ सकती है कि जिस के द्वारा उच्च विचार किये जावें, 'जैसा बोवो वैसा काटो। जैसा करो वैसा भरो, कहावत प्रसिद्ध है' जैसी शिक्षा मिलेगी वैसी ही सूझेगी। व्यभिचार की शिक्षा मिल रही है उसी की अधिक उन्नति होती जावेगी चाहे मस्तिष्क क्या समस्त शरीर का सत्यानाश होजावे और रात दिन नुसखे बँधवाने पड़ें किन्तु उन लकीरों के फ़कीरों को अपनी टेव नहीं छोड़नी। शोक ! कहां तक समझाया जावे ? ऐसी २ नवीन प्रथाऐं प्रचलित होगई हैं कि यदि कुछ ब्रह्मचर्य की रक्षा होती भी हो तो भी न हो, वीर्य रक्षा तो तभी हो सकती है कि जब पहले व्यभिचारकी रोक हो, पहले व्यभिचार का ही द्वार खुला है वही बन्द होना चाहिये तभी वीर्यरक्षा में सफलता होगी जब पहली ही सीढ़ी नहीं है तो आगे को कैसे बढ़ोगे ? "प्रथमकवलेमक्षिकापातः" पहले ही ग्रास में मक्षिका पड़े तो लीजिये

आगे क्या ठिकाना है ? हिरास न हूजिये, उन खोटी पृथाओं की पोल खोल सुनाता हूं कि जिन के द्वारा व्यभिचार उन्नति के शिखर पर पहुंचता जाता है। यदि साहस है और मनुष्य कहलाना चाहते हो तो शीघ्र ही रोकिये अन्यथा महा भयंकर दशा का सामना करते हुवे इस विषय में शीघ्र ही पशुवत् प्रथा प्रारम्भ होजावेगी। इस वास्ते लेखक का सर्व मतावलम्बियों से निवेदन है कि देश में बढ़े हुये व्यभिचार का मूलोच्छेदन करते हुवे शील व्रत (ब्रचह्मर्य) का प्रचार करो, जिससे सर्वसुधार होते हुए अन्त में मोक्ष पद की प्राप्ति हो।

गर्भ में कुशिक्षा

यह विषय बड़ा गंभीर है। इस समय हमारे देश में कोई इस पर विचार नहीं करता परन्तु पूर्वकाल में इस पर बड़ा भारी विचार किया जाता था। जिस प्रकार पेड़ की जड़ में कीड़ा लगने से हज़ार यत्न करने पर भी फिर वृक्ष प्रफुल्लित नहीं होता उसी प्रकार गर्भ में बालक को कुशिक्षा मिलने से कभी संतान सभ्य नहीं बनसकती।

सब से पहिले इसीके सुधार की आवश्यकता है कि जिस को आज कल के लोगों ने साधारण बात विचार ली है। यह बात प्रत्यक्ष देखने में आती है कि जो प्रतिबिम्ब चित्र खींचते समय पड़जाता है पश्चात् हज़ार यत्न करने पर भी नहीं बदल सकता। इसी प्रकार बालक पर जो गर्भ में ही प्रतिबिम्ब पड़जाता है वह बड़े होने पर कदापि नहीं जाता। इसी वास्ते शास्त्रों में स्त्रियों को रोक है कि वे ऋतुकाल में चार दिवस तक किसी का मुख न देखें और चौथे दिवस स्नान करके अवश्य अपने पति का ही मुख देखना चाहिये दूसरे का कदापि नहीं यथाः—

अतीचारादवुधैर्नित्यं रक्षणीया कुलाङ्गना।
आतुर्यवासरं कस्याप्यास्यं पश्येद्दतौ न हि॥ ५॥

अर्हन्नीति पृष्ठ २४३

अर्थ—पण्डितों को चाहिये कि वे भ्रम णादि प्रतिकूल आचरणों से कुलस्त्रियों की रक्षा करते रहें और स्त्रियों को भी ऋतु समय में चार दिन पर्यन्त किसी का भी मुख न देखना चाहिये।

चतुर्थदिवसे स्नात्वेक्षेतास्यं पत्युरेव च ।
ऋतुस्नाने न पश्येत्स्त्री परमर्त्यमुखं कदा ॥ ६ ॥

अर्हन्नीति पृष्ठ २४४

अर्थ—चौथे दिन में सुशीला स्त्री स्नान करके अपने पति का ही मुख देखे किंतु ऋतुस्नान में परपुरुष का कदापि मुंह न देखे ।

देखिये प्रथम से ही कितनी भारी रोक की है और साफ़ बता दिया हैः—

स्नानकाले निरीक्षेत सुरूपं च विरूपकम् ।
पुरुषं जनयेत्पुत्रं तदाकारं मनोरमा ॥ ७ ॥

अर्हन्नीति पृष्ठ २४४

अर्थ—ऋतुस्नान के समय स्त्री जैसे सुन्दरस्वरूप वा कुरूप पुरुष को देखती है उसी के स्वरूप की सन्तान उत्पन्न करती है ।

यद्यज्जातीयपुरुषं यद्यत्कर्मकरं नरम् ।
पश्यति स्नानकाले सा तादृशं जनयेत्सुतम् ॥ ८ ॥

अर्हन्नीति पृष्ठ २४४

अर्थ—ऋतुस्नान से निवृत्त होकर स्त्री जिस जाति

के और जैसा कर्म करने वाले पुरुष का दर्शन करती है उसी के आचरण वाला पुत्र उत्पन्न होता है।

पाठकवर्ग! विचार कीजिये जब आदि में चित्र की भांति गर्भ में ही बच्चे पर प्रतिबिम्ब पड़ता है कि जिस को आज कल के पश्चिमी विद्वान् भी मान चुके हैं और इसके विषय में बहुत से प्रमाण समाचारपत्रों में निकल चुके हैं सो आप लोगों ने देखे ही होंगे, विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है। जब गर्भाधान से ही बच्चे का यत्न किया जाता है तो उस की बढ़वारी में उस से भी बढ़कर शिक्षा की आवश्यकता है। क्योंकि बच्चा गर्भ में आते ही माता के विचारों को ग्रहण करता है तो गर्भ से बाहर आने तक माता के विचार क्यों न ग्रहण करेगा। अवश्य ही करेगा और माता के खान पान ही से उस बालक के अवयवों की वृद्धि होगी तो पहिले ही से श्रेष्ठ पदार्थों का भोजन और उच्च शिक्षा का प्रयोग क्यों नहीं किया जाता कि जिस की त्रुटि होने से सन्तान अयोग्य उत्पन्न होती है। हम देखते हैं कि बालक के जन्म होते ही दाइयां उसके सुधार के वास्ते जो यत्न करती हैं यदि

वही यत्न बड़े होने पर किया जावे तो कभी सफलता नहीं होती। जैसे कि बालक के पैदा होते ही उसे सुलाते समय तकिया लगाया जाता है तो सर गोल वो सुन्दर, और नहीं लगावे तो चपटा हो जाता है। भला पीछे तो कोई इस उपाय से क्या किसी भी उपाय से सफलता प्राप्त करलें? कदापि नहीं होगी। इसी प्रकार बालक की नाक किञ्चित् हाथ के इशारे देने से खड़ी अन्यथा चपटी होजाती है, भला पीछे तो कोई खींचकर भी बढ़ाले? कभी संभव नहीं। अभिप्राय यह कि इसी प्रकार पुत्री के जन्म समय उसके बदन पर चूनकी विशेष मालिश की जाती है कि बाल न्यून उत्पन्न हों और भी बहुत कार्य हैं, उदाहरण को इतने लिखदिये हैं। सारांश क्या निकला कि जितनी पूर्व शिक्षा दी जावेंगी उतनी ही लाभकारी होंगी। अतएव गर्भ के समय गर्भिणी को अच्छी शिक्षा देनी उचित है कि जिससे उसके विचार धार्मिक बने रहें। यदि माता के विचार उच्च कोटि के रहेंगे तो बालक भी उच्च कोटि का उत्पन्न होगा क्योंकि माता के विचारों को ही बच्चा गर्भ में ग्रहण करता है कि जिस के सुधार के वास्ते पहिले

समय में भी दोहले पूर्ण करने की प्रथा थी और लाखों करोड़ों रुपये ही नहीं किन्तु अनेक कष्ट सहन करके भी गर्भिणी के विचारों को विगड़ने नहीं देते थे। अतएव पहिले गर्भ की दशा सुधारिये और गर्भिणी को उच्च कोटि की शिक्षा दीजिये जिस से सन्तान उच्च कोटि की उत्पन्न हो।

परन्तु प्रतिकूल इस के हमारे देश में ऐसी भद्दी प्रथा है कि रही सही गर्भ की रेड़ कर देते हैं। दिनरात ऐसी बुरी कहानियां सुनती सुनाती रहती हैं कि जिसकी जड़ ही व्यभिचार पर हो। सदैव लड़ाई झगड़ों में घरके नहीं तो बाहर के ही सही दिन रात अड़ी रहती हैं। हर समय पाप के विचार रहते हैं जब खाली हुईं तो क्लेशयुक्त वार्ता करती हैं। गाली देना दिवाना, गाना, गवाना, परम मंत्र सिद्ध करा हुआ है। भला वहां श्रेष्ठ संतान की आशा कहां? जैसे माता के विचार होंगे वैसे ही बच्चा गर्भ में ग्रहण करता है। अभिप्राय यह कि जैसे विचार माता के पुत्र प्रसूत होते समय तक रहेंगे, जैसा माता, भोजन खावेगी उसी पर बच्चे का तैयार होना

निर्भर है, वही विचार ग्रहण होते हैं। जब माताओं को ही धर्मज्ञता सुशीलता वीरता कार्यदक्षता की शिक्षा नहीं है तो सन्तान ही कहां से विद्वान् सुशील वीर बना लोगे।

लीजिये सब से बढ़िया एक बात आप को ढके शब्दों में और भी बताए देता हूं ध्यान धर सुन लीजिये सर्व व्यभिचार की जड़ कहो वा सत्यानाशी चाल कहो यही एक गर्भसमय कुकर्म विषय) सेवन करना है। इसी से सदैव गर्भिणी के विचार विषय भोग में रहते हैं और उन बुरी वासनाओं के कारण संतान भी वैसी ही विषयी उत्पन्न होती है। परिणाम यह होता है कि पुत्रियां दुराचारिणी और पुत्र इग़लामबाज़ बन जाते हैं। बस मैं अब अधिक नहीं कहना चाहता क्योंकि लेख अश्लील हो जावेगा, आप इतने में बहुत कुछ समझ सकते हैं। यदि सन्तान को सुशील बनाना चाहते हैं तो पहिला काम आप का गर्भसमय की शिक्षा का है। यदि साहस है तो सुधार करो। पशु तक भी गर्भ धारण कर विषय भोग से किनारा कर जाते हैं तो आप लोग मनुष्य होते हुए क्या उन से भी अधिक अधोगति को प्राप्त होना चाहते

हैं । जब गाय, भैंस, कुतिया, बिल्ली, घोड़ी, गधी, गर्भाधानके पश्चात् इस कुकर्म को छोड़ देते हैं तो क्या आप उन कुत्ते बिल्ली, गधों से भी बढ़ गये जो इस दुराचार को नहीं छोड़ते । मित्रो ! सोचो और ध्यान दो उपरोक्त पशु भी इस बात में आप से उच्च कोटि में होगये तो क्या यह देख कर कि पशुओं से भी हमारी दशा गिर गई आप उठने का प्रयत्न न करेंगे ? मुझे विश्वासहै अवश्य करेंगे बस प्रार्थना है शीघ्र प्रयत्न कीजिये ।

बाल्य अवस्था में अयोग्य शिक्षा

यह विषय भी पूर्ण ध्यान देने योग्य है पर इस का विशेष सम्बन्ध बालक को शिक्षित बनाने से है अतएव विशेष वर्णन किसी और स्थान पर करेंगे तो भी यहां जितना सम्बन्ध है उतना कह देना उचित है कि जिस प्रकार कुम्हार के चाक पर मिट्टी के बर्तन उतारने में जितना बढ़िया कुम्हार होगा उतना ही साफ़ बर्तन उतरेगा और जितना अयोग्य कुम्हार होगा उतना ही कार्य्य भद्दा होगा बस इसी प्रकार जितने योग्य माता पिता

के संस्कारों से बच्चा पलेगा उतना ही सुशील और जितना चेष्टाहीन माता पिताओं से पलेगा उतना ही व्यभि-चारी आदि बनेगा क्योंकि व्यभिचारी मनुष्य हो वा स्त्री उस के तो हर समय वही कथा है। भाषा भी बोलेंगे तो उस में वही शब्द बोलेंगे, मिलने वाला आवेगा तो वही कहानी होगी, किसी पर क्रोधित होगा तो वही विषयी शब्दों की बौछार है। अभिप्राय यह कि जितने उसके कर्त्तव्य होंगे विषय वासना से शून्य न होंगे क्योंकि जो मनुष्य जैसा होता है स्वभाव नहीं जाता और बच्चा ज्यों२ ज्ञानवान् होता है पालन पोषण करने वाले ही के आचरण सीखता है तो भला कुशीलियों के संस्कारों से पला हुआ बालक सुशील कैसे बन सकता है? प्रत्यक्ष देखते हैं कि एक ही अवस्था वाले एक मूर्ख जट्ट का बालक और एक किसी विद्वान् के बालक का मुक़ाबला करते हैं तो पृथ्वी आकाश का सा अन्तर मालूम होता है इस से सिद्ध है कि मूर्ख जट्ट का बालक अनपढ़ों के संस्कारों से पला है इसलिये उसका वही चाल ढाल है और विद्वान् का बालक विद्वानों के संस्कारों से पला है जिससे

उत्तमता को प्राप्त है। इस वास्ते मित्रवरो ! पहिले से ही बालक को बुरे संस्कारों से बचाना चाहिये।

हमारे देश में अब बड़ी भारी भद्दी प्रथा पड़ गई है कि बालक को गाली देकर बुलाते हैं। उसको नासमझ जान उस के पास विषयी कथा पढ़ने से भी नहीं डरते हैं। उस में बोलने (स्पष्ट बात कहने) की शक्ति न समझ कर उसके सामने वहुत से घरों में पति पत्नी अपने संसारी सुख भोग लेते हैं जो उस बालक को बड़े होने पर महान् हानिकारक सिद्ध होता है। कुछ बड़े होने पर उस बालक को विषयी संकेत सिखाते हैं। दूसरों को गालियां दिलाते हैं। ऐसे व्यभिचारी नौकरों के साथ उनका पालन, पोषण कराते हैं कि यदि बालक सुशील भी हो तो वह व्यभिचारी बना देते हैं। मूर्ख जानते हैं कि हम खिलवाड़ करते हैं पर गुप्त लीलायें क्या होती हैं सो उन को स्वप्न में भी पता नहीं होता। अतएव उचित है कि बालक को अपने सामने ही वा किसी पूर्ण विश्वासी के पास शिक्षा दिलाना चाहिये और उनके चाल ढाल

पर विशेष दृष्टि रखनी चाहिये जिस से भविष्य में सन्तान ब्रह्मचारी बनें।

वेश्या नृत्य।

यह दुष्ट प्रथा इतनी भारत में फैल गई है कि अपने विषय जाल में बहुतों को फँसा लिया है। प्रत्येक जाति में इसका प्रचार अधिकता से पाया जाता है। विवाह शादियों में बिना इसके टुकड़ा भी नहीं टूटता। यहां तक कि बिना इसके शोभा ही नहीं समझी जाती। यदि कोई सभ्य पुरुष न बुलावे तो कहदें विवाह की धूल होगई। मूर्ख यह नहीं जानते कि धूल हमारे घर की हो रही है। रुपया बरबाद, सन्तान विषयी बनती जाती है पर प्रतिकूल इस विचार के उलटा बेटे वाले को वैश्या नचाने के वास्ते विवश करते हैं और संकेत पाने पर तुरन्त ही रंडी बुला व्यभिचार का द्वार खोल देते हैं। चाहे घर जाने पर मकान दुकान नीलाम होने का नम्बर क्यों न आवे पर उस समय रण्डी नचाने से नहीं हिचकते। पिता, पुत्र चचा, भतीजे सभी छोटे बड़े सहित बिरादरी समस्त मिल

बड़े चाव से गान सुनते हैं। चाहे मन्दिर में एक घण्टा भगवत् भजन सुनने में निद्रा लेने लगें, परन्तु वहां वेश्या का नाच सारी रात टकटकी लगाये सुनते रहेंगे क्या मज़ाल है जो पलक भी लग जावे आपस में हंसी ठट्ठा कुमार्ग की छेड़ छाड़ करते हुए घोडे की भांति खूब हिन हिनाकर हंसते रहेंगे।

पाठकवर! विचार करने का स्थान है कि आपकी सन्तान और स्त्रियें जो नाच देखने में सम्मिलित होती हैं उन पर क्या प्रभाव होगा और इस वैश्यानृत्य से क्या शिक्षा ग्रहण करेंगी? वेखटके मानना पड़ेगा कि जब कि एक स्त्री को इतने पुरुषों को भक्ति करते देखेंगी तो अवश्य दूसरी स्त्रियां भी उसी पथ को ग्रहण करके व्यभिचारिणी बनेंगी कि जिस के अनेक उदाहरण उपस्थित हैं जो लेख बढ़ने के भय से नहीं लिखता हूं पर वेश्याओं के से महीन वस्त्रादि का पहनावा तो बहुत परिवारों में प्रवेश कर भी गया है जो आप भी प्रत्यक्ष देख रहे हैं। इसी से आप हिसाब लगा लीजिये कि दूसरी चालें प्रवेश होने में क्या देरी है।

दूसरे आप लोगों में भी उस समय छोटे बड़े का

कोई विचार नहीं होता। विनय अंग भंग होने के अति-रिक्त सब कोई स्वस्त्री की दृष्टि से घूरते (देखते) हैं तो कहिये परस्पर क्या सम्बन्ध हुवे ? क्या वाममार्ग और चार्वाक को स्वयम् ऐसा कर्म करते बुरा कहने का साहस करोगे ? जो छोटी २ सन्तान हैं इस लीला को देख कर शीलवान बनेंगी वा विषयी सो तुम स्वयम् विचार लो।

मित्रो ! कहां तक उल्लेख किया जावे एक से एक प्रथा निराली है। कहीं २ समधी के घर पर वेश्या को ले जाकर सीठने (गालियां) गवाते हैं, समधनों को तो खूब ही वेतुकी सुनवाते हैं और मन में मग्न होते हैं कि हमने बड़ी भारी वीरता कमाई। धिक्कार है ! इस वीरता पर। समस्त स्त्री पुरुषों को कुमार्ग पथ बताते हुवे आप नरक में डूबना क्या यही वीरता है? प्रथम तो किसी को भी गाली देना बुरा है, उसमें भी स्वधर्मी और सम्बन्धियों को गालियाँ सुनाना कौन बुद्धिमत्ता है? उधर से उत्तर में समधिनें भी कुछ कमी उठा नहीं रखतीं। कमी क्यों रक्खें।

" धोवन से क्या तेलन घाट, वाके मुगड़ा वाके लाट " वाली कहावत है जो अपनी समधिनों को सीठने सुनवावें तो वे अपने समधी को वेतुकी की क्यों न बोछार लगावें। क्या अच्छा वाक्ययुद्ध है। लज्जावानों को तो लज्जा आती है पर निर्लज्जों से पार नहीं बसाती। एक ही समय नहीं किन्तु विवाहों में मिलनी होगी तो क्या बरात चढ़ेगी तो क्या, और लड़का होगा तो क्या और दसोटन होवे वो क्या जितने शुभ कार्य्य होंगे विना इस कलियुगी देवी के पत्ता नहीं हिलता, चाहे परिपाटी बिगड़ना तो दूर रहा घरके पुत्र पुत्रियां व्यभिचारी क्यों न बनजावें पर उन्हें कुलतारिणी कलियुगी देवी नचाना अवश्य। यदि धर्म में पैसा मांगो तो प्राण निकले समान दुख हो, पर रंडी के लिये उधार लाकर के भी देना अच्छा मानते हैं। किसी कवि ने कहा है:—

फ़क़ीर मांगे पैसा, चलवे भड़वे कैसा।
रंडी मांगे रुपैया, ये ले मेरी मैया॥

हाय २ कैसी निर्लज्जता है। स्वयं नरक के अधिकारी बनकर अपनी प्यारी सन्तति और नारियों को व्यभि-

चारिणी बना रहे हैं! ऐ जाति के मुखियाओ! अब तो इन कुचालों को त्यागो और जातीय दशा पर दया करो, व्यभिचार की वंश बेल मत बढ़ाओ। जब आप लोग ही नहीं चूकते तो फिर आप की सन्तान क्या ख़ाक मानेगी वह कहेगी कि 'बाबा लीक प्रमाण' जो बाप करते आये हम भी करेंगे। इस प्रथा ने हज़ारों स्त्री पुरुष व्यभिचारी बना दिये पर लोग नहीं मानते और अपनी कलियुगी देवी की सेवा किये ही जाते हैं कि जिसका सम्पूर्ण हाल लिखूँ तो लेख बढ़ जाता है अस्तु, विशेष हाल देखना हो तो मेरा बनाया कलयुगी देवी नाम का ट्रैक्ट संख्या १ देखो और अन्तिम परिणाम सोच समझ कर अपने२ नगरों में पंचायतें करके इस प्रणाली को बन्द करदो जो भविष्य में आपकी सन्तानें सुशील ब्रह्मचारी बनें।

वृद्ध-विवाह।

जैन शास्त्रों में लिखा है और यही समस्त मज़हब के विद्वानों की सम्मति है कि वर वधू का युवा अवस्था में ही विवाह होना अति उत्तम है और जहां तक विचार

किया जाता है यही अतिश्रेष्ठ प्रथा है परन्तु हमारे देश में इसके प्रतिकूल अस्सी ८० वर्षके बूढ़े खूसटके साथ आठ दश वर्ष की भोली भाली अनसमझ कन्या का विवाह कर दिया जाता है। वह बेचारी यह भी नहीं जानती कि बुड्ढे बाबा के साथ मैं क्या खेल खेलती हूं। सुसराल को जब विदा होती है तब भी उन को यह ध्यान नहीं कि मैं जिसके साथ जाती हूं यह मेरा पति है वा बाबा वह बालिका जानती है कि एक बाबा घर में थे जिसने मुझे इतनी बड़ी की अब दूसरे बाबा के साथ चलती हूं, आगे यह निभावेगा पर बुड्ढा थोड़े ही दिनों में स्वर्ग सिधार जाता है। कन्या बेचारी जब युवा अवस्था में आती है तब उसको आगा पीछा दीखता है कि लोगों ने मेरे साथ कितना अन्याय किया है, खेलते कूदते रांड करके बिठादी है। उस समय उसकी विरह अग्नि की धारा किसकी समर्थ है जो रोक सकता है। तुरन्त लज्जा छोड़ शील से मुखड़ा मोड़, कुशीलता के मैदान में वह निकलती है। बहुतसी सुशीला कुकर्म से बचीं तो भी आंसूपात करती हुई यह ही विवाह रचाने वालों को आशीर्वाद देती हैं

कि जिन्होंने द्रव्य के लालच से उस बेचारी नवयौवना को कूप में धक्का दीना है:—

यथा

मरियो भोजक नाई, जिन जाकर करी सगाई।
मरियो बाप और भाई, जिन बुड्ढे को परणाई॥

मित्रवरो! इस रूपचन्द्र (रुपये) के लालच में पड़ कर कुछ आगा पीछा न सोच कर ऐसा अन्याय किया जाता है कि लेखनी लिखते थर्राती है परन्तु उन पापियों का हृदय दुष्ट कार्य करते नहीं कांपता। कसाई मुर्दा मांस वेचता है पर यह कन्या वेचने वाले जीते जी कन्या का मांस वेच खाते हैं सौदा होता है कहा जाता है कि एक एक आंख एक २ हज़ार की है, दूसरे अङ्ग तो जुदे हैं वढ़े सो पावे इत्यादि जो अधिक दाम लगाता है उसीके नाम कन्या का नीलाम छूटजाता है अर्थात् विवाह हो जाता है। इस पर एक भजन भी है:—

भजन

माँस वेचें बेटी का, पापी करें पुत्री नीलाम (टेक)
बकरी भेड़ दुम्बों की न्याईं। कन्या वेचें हैं अन्याई।

करते मोल शर्म न आई । तज दीनी हया तमाम (मांस०) ॥१॥
कोई एक हज़ार सुनावे । कोई दोय तीन फ़रमावे ।
बुड्ढा मांगों सो दे जावे । हो सोदा बीच हंगाम (मांस०) ॥२॥
घना रुपैया जोय लगावे । उसको ही कन्या छुट जावे ।
फेरों पर नक़दी गिनवावे । माने नहीं गुलाम (माँस०) ॥ ३ ॥
पुत्री का जिन खोटा चीन्हा । लेकर रुपा रंड़ापा दीना ।
लानत है जग उसका जीना । कह जैनी सत्य कलाम (मांस०)४

और भी बहुत भजन हैं, देखने हों तो मेरा बनाया भजनपचासा ट्रेक्ट संख्या २ और भजनपच्चीसा ट्रेक्ट संख्या ३ मंगाकर देखिये ।

मित्रवरो ! विचारने का स्थान है कि कन्या वेचारियों पर कितना अन्याय है, उन पुत्रियों को सुसराल जाते ही खाने तक को द्रव्य न बचे और व्यभिचारी बनें परन्तु ये दुष्ट अपना लेटरवक्स भर ही लेते हैं। जब ऐसे २ बुड्ढों के साथ इन अबलाओं का विवाह होता है कि जिन के न पेट में आंत, न मुख में दांत है। गालों में सलवट घाई पड़ गई है, कमर मुड़ कर कमान होगई है, लठिया पकड़ कर चलने वाला वर है तो कहो उस बेचारी नवयौवना की कैसे इच्छा पूर्ण कर सकता

है ? अवश्य ही वधू दुराचार सीखेगी। उस समय शील की रक्षा करना क्या छोटीसी बात समझते हो ? थोड़ी ही सभ्य स्त्रियें आपको दिखाई देंगी अन्यथा बहुतों के शील की सफ़ाई इसी अन्याय युक्त विवाह के कारण होती है। जब ऐसी २ खोटी प्रथा नहीं रोकी जाती तभी तो व्यभिचार दमादम बढ़ता जाता है। यदि इन बातों का प्रथम ही से सुधार हो जावे तो काहे को यह दशा देखनी पड़े।

बालविवाह।

सभी विद्वानों का अटल सिद्धान्त है कि विवाह यौवन अवस्था में ही होना उचित है और ऐसा ही स्वर्गवासी जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि प्रसिद्ध नाम श्रीमान् आत्माराम जी महाराज भी बतलाते हैं:—

जैनागम में तो "जोव्वण गमणमणुपत्तो" इति वचनात्। जब वर कन्या यौवन को प्राप्त होवें तब विवाह करना इत्यादि।

तत्वनिर्णय प्रसाद ग्रन्थ पृष्ठ २८६

परन्तु इस देश का विचित्र अन्धेर खाता है। ऐसी औंधी जोड़ मिलाई जाती है कि कहते हंसी आती है कि वर तो सात आठ वरस का लल्ला और वधू अठारह वीस वरस की नवयौवना ? भला विचार तो कीजिये वह लल्ला को दूध पिलावेगी वा गोद खिलावेगी या पालने में झुलावेगी ?

धन्य है रे जोड़ मिलाने वालो ! लज्जा तो न आती होगी ? किञ्चित् विचारा तो होता कि इस का परिणाम क्या होगा ? क्या इसी वर पर कन्या सन्तोष करेगी ? यदि कन्या इस से किंचित् भी विमुख होती है तो तुम समस्त बिरादरी वाले उस पर कटाक्षों की भरमार कर पृथ्वी आकाश एक कर देते हो और कहते हो कि कन्या पति की आज्ञा नहीं मानती पर जब ऐसे २ अनमेल जोड़े मिलाये जाते हैं तब कहने वाले कहां मर जाते हैं जो मुख से बोलते भी नहीं। मित्र ! आप ही विचारिये क्या वह बच्चा वधू की इच्छा पूर्ण कर सकता है ? यदि नहीं तो बताओ व्यभिचार घटेगा वा बढ़ेगा ? यदि बढ़ेगा तो

अवश्य इसका जाति की ओर से क्यों नहीं सुधार किया जाता ?

द्वितीय, पति तो स्वयम् ही लल्ला है तो दूसरे लल्ला पैदा करने की आशा ही क्या है। स्वयम् ही माता, शीतलादि रोगों के चक्कर में पड़ गये तो और भी लेने के देने पड़ गये। दुखिया रांड छाती पर रह गई जिसने एक दिन भी सुहाग नहीं देखा। घर में बैठी रुदन करती हुई वह हृदयवेधक शब्द उच्चारण करती है कि सुन कर सभी का कलेजा काँपता है तब वही जोड़ मिलाने वाले दिलासा देते हैं—कहते हैं "धर्म पर दृष्टि दो, संतोष करो।" अरे संतोष क्या खाक करे जब तुम्हारी आंखें फूट गईं थीं जो एक दिन का भी सुख न देख सके ऐसा औंधा जोड़ मिला लाये। स्मरण रक्खो ऐसा कलंक का टीका लगावे जो सारी आयु स्मरण रहे। शर्म! शर्म!! शर्म!!! क्या अब भी ऐसी कुरीतियों से हाथ न उठावोगे ? मित्रो! सचेत हो और ऐसी कुप्रथाओं को दूर भगाओ और ऐसी खोटी प्रणालियों का पंचायतों द्वारा जड़ मूल

से निकन्दन करदो तभी सच्ची व्यभिचार की रोक हो कर ब्रह्मचारी सन्तानें बनेंगी ।

अनजान बच्चों का विवाह ।

मित्रवरो ! आपने लड़कियों को गुड़ियाओं का खेल खेलते देखा होगा । वह बच्चों का एक प्रकार का खेल होता है जो लड़कियों को घर का काम सिखाने में अति उत्तम प्रमाणित होचुका है उस में अब कहीं २ गुड्डा गड़ियों का विवाह भी रचा जाता है । यह अनजान बच्चों का विवाह भी ठीक उसी की भांति समझना चाहिये । दोनों वर कन्या इतने छोटे होते हैं कि वह वेचारे यह भी नहीं जानते कि यह आडम्बर क्यों और किस वास्ते हो रहा है, विवाह कहते किस को हैं । वह तो वेचारे एक खेल सा खेलते हैं और यहां उन के भाग्य का निपटारा भी साथ साथ हो जाता है । वहुतों को तो गोदी में उठा कर फेरे फिराये जाते हैं । भला, ऐसी दशा में उन के ब्रह्मचर्य्य का सफ़ाया कर वल पराक्रम को नष्ट करने वाले माता पितादि नहीं तो और कौन हैं ? जैन शास्त्रों की साफ़ आज्ञा है कि कन्या १६ वें वरस में और

पुरुष के पच्चीसवें वरस में जो सन्तान उत्पन्न होती है वह बलवान् होती है। देखो तत्त्वनिर्णय प्रसाद ग्रन्थकर्त्ता कलिकाल की अपेक्षा सर्वज्ञ समान जैनाचार्य श्री श्री श्री १००८ श्रीमद्विजयानन्द सूरि प्रसिद्ध नाम (आत्मारामजी) महाराज क्या आज्ञा देते हैं—उक्त ग्रन्थ के पृष्ठ ३८६ में लिखा है:—

प्रवचनसोरोद्धार में लिखा है कि सोलह वर्ष की स्त्री और पच्चीस वर्ष का पुरुष तिन के संयोग से जो सन्तान उत्पन्न हो सो बलिष्ठ होवे है। इत्यादि मूलागम से तो बाललग्न और वृद्ध के विवाह का निषेध सिद्ध होता है।"

देखिये पूर्वोक्त महात्मा की क्या सम्मति है। इसी प्रकार अन्य मतावलम्बियों की यही सम्मति है। विस्तार के भय से केवल एक ही वैदिक मत का प्रमाण दिखाते हैं। उक्त मत की संस्कारविधि के पृष्ठ २९ में यही लिखा है:—

न्यूनसे न्यून १६ वर्ष की कन्या और पच्चीस वर्ष का पुरुष अवश्य हो और उससे अधिक वय वाले होने से

अधिक उत्तम सन्तान होती है क्योंकि विना सोलह वर्ष के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने के लिये अवकाश और गर्भ के धारण पोषण का सामर्थ्य भी कभी नहीं होता और पच्चीस वर्ष के विना पुरुष का वीर्य्य भी उत्तम नहीं होता इस में यह प्रमाण है:—

पंचविंशे ततो वर्षे पुमन्नारी तु षोडशे।
समत्वागतवीर्य्यौ तौ जानीयात् कुशलो भिषक्॥ १॥

सुश्रुते सूत्रस्थाने अ० ॥ ३५ ॥

अर्थ—पच्चीसवें वर्ष में पुरुष और सोलहवें वर्ष में स्त्री तुल्य वीर्य वाले होजाते हैं यह निपुण वैद्य को जानना चाहिये।

और भी बहुत लोगों के प्रमाण हैं जो ग्रन्थ बढ़ने के भय से नहीं लिखता हूं। इसी से आप लोग विचार कर लीजिये कि स्वमत और परमत सभी मत मतान्तर इस ब्रह्मचर्य्य व्रत की रक्षा में कटिबद्ध हैं तो आप ऐसे बच्चों को कि जिनके दूध के दांत भी नहीं टूटे हैं वृथा क्यों काठ में फंसाते हो? कहावत भी है:—

फूले फूले फिरत हैं आज हमारा व्याव ।
तुलसी गाय बजाय के, दिया काठ में पांव ॥

मित्रवर ! ऐसे ही विवाहों की चाल ने देश में बल, वीर्य, आयु घटा रोगी दरिद्र बना दिये हैं कि जिसको प्रस्तावना में भलीप्रकार दिखा आये हैं तो भला अब क्यों रेढ़ मारे जाते हो ? ऐसे विवाहों से प्रत्यक्ष हजारों हानियां होने के अतिरिक्त यदि बच्चा चेचक शीतला माता प्लेग का शिकार बनजावे तो कहो छोरी (लड़की) की पीछे क्या दुर्दशा होगी ? वह बेचारी अनजान कन्या यहभी नहीं जानती कि "पति मरे कि भैया" क्योंकि वह भला क्या जाने, पति क्या होता है और विवाह किसको कहते हैं । भला जो विवाह के शब्द का अर्थ ही न जाने ऐसों का विवाह रचाना घोर दुष्टता क्रूरता स्वार्थीपन नहीं

नोट—कितने ही व्यभिचारियों ने व्यभिचार के रोकने का सहारा लेकर पुनर्विवाह करने तक की आज्ञा देकर और भी व्यभिचार को बढ़ा दिया है पर यहां तो हर प्रकार से घटाने की प्रथा बताई गई है । जिस प्रकार से हो उसी प्रकार ये व्यभिचार बन्द होकर वीर्य्य रक्षा करने का ही मन्तव्य है ।

तो और क्या है? तभी इस देश में दो दो और तीन २ चार २ वर्ष की लाखों करोड़ों विधवायें होगईं और आठ दश वर्ष की तो भरमार है। बड़ी अवस्थाकी तो आपको वहुत ही कम दृष्टि आती हैं और बाला अति विशेष। यह सब आपके बाला और बृद्ध विवाह का ही परिणाम है और जब युवा अवस्था में पहुंचती है तब काम अरि को न जीतने के कारण गुप्त अनाचार बढ़ते हैं। मित्रवर! यदि पहिले से योग्य जोड़ी मिलाई जावे तो इतना अन्धेर ही क्यों बढ़े? पर बुद्धि के शत्रु मानते ही नहीं, बुद्धिके पीछे लट्ठ लिये फ़िरते हैं। भला वह बेचारी छोरियें कि जिनको विवाह होनेपर युवावस्था में यह भी स्मरण नहीं आता कि मैं विवाही गई थी या अभी तक कुंवारी हूं अपने पति की कि जिसको भाई समझ कर बचपन में खेलती रही आकृति तक स्मरण नहीं रहती तो भला ऐसी दशा में उन बेचारी कन्याओं को आंख मिचौनी का सा खेल खिलाकर खेलते कूदते रांड करके बिठा देना क्या जान बूझ कर व्यभिचार बढ़ाना

नहीं तो और क्या है। क्या ऐसी दशा में वह सभ्य हो सकती हैं ? कदापि नहीं। अवश्य ही व्यभिचार सीखेंगी। शोक ३, आप जानते हुए भी ऐसी कुचालें वन्द नहीं करते कि जिससे व्यभिचार रुके। कितनी लज्जा की बात है। यदि साहस है तो तुरन्त वन्द कीजिये और कराइये। आज कल इसी का प्रचार अधिक है इसी की रोक से सन्तान ब्रह्मचारी वनेगी।

असभ्य गायन अर्थात् गालीमन्त्र।

इस मन्त्र के रंग ढंग की उमंग ही न्यारी है। वड़े छोटे सभी घरों में इसका प्रचार है। विवाह शादीमें विना इसके टुकड़ा भी नहीं टूटता। यदि भोजन खाने भी वैठेंगे तो स्त्रियों से सीठने (गाली) अवश्य सुने जायेंगे। भोजन करते जायंगे हंसी ठट्ठा भी साथ २ होता जायगा। वहां अस्सी वरस का वुड्ढा भी छोरा ही बन कर अपनी न्यारी ही भैरवी उड़ावेगा। पुन्सवन संस्कार आदि जो कोई भी संस्कार होगा गालियों का मांगलिक पहले गाया जायगा। जवांई, वहनोई (जीजा), समधी

घर पर आवेगा तब उसकी भी आव भगत अवश्य गालियों से ही की जावेगी।

चित्त विनोदार्थ भी किसी किसी अपने दामाद (जामात्री) आदि को मंगलकारी गायन सुनाकर प्रसन्न किया जाता है तो भी यही सौगात पोते वाकी में स्त्रीगण के शेष रहता है। जो गाली सीटने आदि नामों से पुकारा जाता है, खूब वेतुकी सुनाई जाती है, पुरुषों को लज्जा सुनने से आजावे परन्तु नारीसमाज लज्जित कदापि नहीं होता, मैं नमूने को कुछ शब्द उपस्थित करूंगा पर लिखते हुए, जड़ लेखनी भी थर्राती है परन्तु उन देखत की भोली भाली पर वास्तवक में महाकपट की खान ऐसी नारियों को गाते हुए लज्जा नहीं आती।

माता, सास, बहन, बहू, बेटी, अबला कन्या सभी स्त्री समाज मिल कर, वे लच्छेदार गालियां उड़ाती हैं कि सभी सभ्य पुरुषों को कानों में उङ्गलियां डालनी पड़ती हैं। सारी करतूतें तो किसी दूसरे ट्रैक्ट में दिखाऊंगा पर बानगी तो अब भी देख लीजिये और परिणाम पर ध्यान दीजिये।

पूर्व में—'जानू जिया जीजा से यारी' इत्यादि गाया जाता है।

युक्त प्रान्त में—'सच सच बता दे प्यारी, तेरी गंगो से यारी है' इत्यादि गाया जाता है।

भला कोई पूछे यारी किस बात की? क्या कोई व्यापार करना है? खूब यारी जोड़ी। पाठकवर स्वयं विचार सकते हैं कि दूसरी सुनने वाली स्त्रियां जो सतवन्ती भी हैं उन पर कैसा प्रभाव होगा? विशेष कर कन्याएं इन गायनों से क्या शिक्षा लेंगी और यह उनके लिये कैसी शिक्षा है? क्या इन गालियों के रंग उनके अंग में कामदेव की उमंग न उठावेंगे।

मारवाड़ में—'के कह्यो तो बोले बारों बापोंरा,
के कह्यो तो बोले तेरों जातोंरा।
इत्यादि गाया जाता है।

अब करिये विचार, बारह बाप और तेरह जातों से क्यों कर लड़का पैदा हो सकता है? क्या यह व्यभिचार की सब से आला तालीम नहीं है जो समस्त परिवार के

समक्ष ढोलकी पर तान उड़ती है ? क्या ऐसी शिक्षा से सन्तान सभ्य बन सकती है ? कदापि नहीं । अवश्य संगत का प्रभाव पड़ेगा, और भी सुनिये—

व्रज में—' क्या करोगी रामा बृन्दावन बस के ।
अमुक १ चन्द को उड़ायदो वाही २ पै धरके' । इत्यादि गाया जाता है ।

मित्रवर ! (१) के चिन्ह पर जिसको गाली गाई जाती है उसका नाम और वाही स्थान पर जहां (२) का चिन्ह है पुरुष चिन्ह का हिंदी में स्पष्ट नाम उच्चारण करते हैं । हा ! हा !! हा !!! क्या कुछ अब भी न्यूनता रह गई ? शर्म शर्म ! लज्जा की समाप्ति होगई, जब ऐसा निर्लज्ज बका जाता है और सभी स्त्री पुरुष कान लगाये सुनते हैं जिस में बाप, भाई, ससुरा, जमाई आदि सब प्रकार के सम्बन्धी होते हैं । सभी गोबरगणेश की भान्ति चुप चाप श्रवण कर कुछ रोक नहीं करते बल्कि बहुत बुद्धिहीन कहते हैं— शाबास, २ बहुत अच्छा गाया । धिक्कार है ऐसे कहने पर और कहने वालों पर । इससे तो चुल्लू

भर पानी में डूब मरना चाहिये । अरे बुद्धिहीनो ! किञ्चित् तो विचार किया होता कि जो छोटे छोटे बच्चे हैं उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा । छोटी अवस्था से गाली ही सीखेंगे जो बड़े होने पर भी अश्लीलता न जावेगी और घर भर में गाली मंत्र का राग गाते फिरेंगे जिन से रही सही और भी परिपाटी बिगड़ कर शील का सफ़ाया हो जावेगा क्योंकि उस समय के विचार उनके हृदयों में प्रविष्ट होजाते हैं और कन्या तथा विधवा स्त्रियों का जो रंग पलट कर कामवासनाएं जागृत होती हैं इन का भी अनुमान आप ही लगालें । यहां तक कि जो कन्या कुछ नहीं जानती वे भी गालियां सुन २ कर चौकन्नी हो जाती हैं । क्यों न हो खरबूज़े को देख कर खरबूज़ा रंग पलटता ही है तो भला इस व्यभिचारी शिक्षा मिलने से कब वे शील पालना सीखेंगी अवश्य ही दुराचार में प्रवृत्त होंगी ।

मित्रो ! आप लोगों को इतना तो विचारना था कि जब स्त्री कथा तक की रोक की गई है तो यह

उस का भी गुरुघंटाल गालीमंत्र का क्यों प्रचार होने दें ? क्या वे बच्चे जो गालियों के गायन सुन २ कर गाली देना सीख जाते हैं बड़े होकर आप को आज्ञा में चलेंगे ? सभ्य वचन बोलेंगे ? कदापि नहीं किन्तु वे क्या जिन गाली गाने वाली स्त्रियों की जिव्हा आप के सामने निकल चुकी है वे भी वश में न आवेंगी। किञ्चित् उनसे कहोगे तो सीधी सुनाएंगी क्योंकि आपने उनकी गाली सुन २ कर उनको मुँह फट बना लिया है। जब उन का दिल [हौसला] गालियां बकने का तुम्हारे सामने होगया तो अब उन्हें डर ही किस बात का ? लगे दाव तो तुम्हारी पगड़ी भी उतारलें। भला, जहां बचपन से ही ऐसी औंधी शिक्षा मिले तो अच्छा परिणाम भला कहां से आवे । इस से ऐसी प्रथायें पञ्चायतों द्वारा शीघ्र ही बन्द करने की आवश्यकता है यदि स्त्रियां सभ्य बनाना चाहते हो तो एक दम सुधार पर डट जाओ और इस प्रथा की जड़ उखाड़ कर भस्म करदो अन्यथा महा भयंकर समयका सामना करना पड़ेगा।

खोड़िया (टूटिया)।

यह सब कुचालों की गुरु घंटाल कुचाल है। सब बदकारियों की जड़ कहो या पिटारा जिस में सारी कुचालें समा जावें यही खोड़िये की कुचाल हैं। इस समय स्त्रियों को दुराचारणी बनाने का यही प्रधान कारण खोड़िया है जो विवाह शादियों में बरात जानेके पश्चात् बेटे वाले के यहां होता है बिरादरी की सब स्त्रियें तथा नायन धोबन दरजन मनहारन कहारन (धींवरी) आदि बदचलन स्त्रियों को बुलाकर नृत्य गायन करवाया जाता है जिन में उन दुराचारणी नीच जातियों की स्त्रियों के साथ बड़े २ घराने की स्त्रियां भी निर्लज्जता के गीत गाने और नाचने लग जाती हैं। यदि कोई नेक चलन सुशीला स्त्री इस दुष्ट कार्य्य से पृथक् होना चाहे तो उसे भी विवशकर खींचतान के सम्मिलित करती हैं और गीत गाने और नाचने में अपनी सहेली बनाती है उस समय अपने अङ्ग उपांग ढकने की कोई आवश्यकता नहीं है जो जी में आया मन भाया होता है। कोई पुरुष का

रूप बना कर आज्ञा देती है, कोई कोट पजामा डाट कर गाना उड़ाती है–कोई खूब ठिनठिनाती नृत्य करती है, कोइ हिनहिनाती हैं, कोई उछलती है, कोई नचकती है कोई उचकती है, कोई ले मूसल गुप्त संकेत करके पर्षदा को हंसाती है, लहेंगा फिरा कर घूमर खेलती हैं ! कहांतक वर्णन करूं देश देश में जुदी २ प्रथा एक से एक वढ़कर शोक में आने वाले दुराचार निर्लज्जता करतूतें होती हैं कि मुझे लिखते हुवे लज्जा आती है पर उन वेहया निर्लज्ज खानदानी स्त्रियों को ऐसे २ कुकर्म करते लज्जा नहीं आती।

मित्रवर! विचारने का स्थान है कन्या और पतिवि-योग स्त्री कि जिन की वड़ी शोचनीय दशा है वे तो बच ही नहीं सकतीं पर दूसरियों ही की क्या खैर है।

बहुत से व्यभिचारी और वदचलन लोग स्त्रियों का भेष भर कर छल कपट से बड़े २ घरों की वहू वेटियों को देख आते हैं। उस समय उन के सांगोपांग स्वच्छन्द देखने से उन के मन में किसी पतिव्रता

नवोढा पर बुरी दृष्टि हो जाती है। फिर उस को सैं-कड़ों उपायों से धन मान (इज्ज़त आबरू) खोकर भी प्राप्त करके अपना कार्य सफल करता है। इस के सिवाय उन नीच जाति की स्त्रियों के साथ निःशंक निर्लज्ज होकर नृत्य गान करने से तथा देखने सुनने से कैसी ही पतिव्रता, शीलवती स्त्री क्यों न हो उसके मन में पाप कार्य्य करने की तथा नाचने गाने की लालसा बढ़ती जाती है इस कारण यह रीति बहुत ही हानिकारक है, परन्तु आश्चर्य है कि यह रीति इतनी बढ़ गई है कि इस से कोई नगर और कोई ग्राम नहीं बचा। न मालूम यह रीति किस दुष्टात्मा ने चला दी है जो कि शास्त्र और बुद्धि के बिल्कुल विरुद्ध है। जो स्त्री इस खोड़िया को देखने जाती है उस को कोई भी विद्वान् बुद्धिमान पति-व्रता नहीं कह सकता क्योंकि जो पतिव्रता और नेक चलन स्त्रियां होंगी वह कभी ऐसी जगह न जावेंगी। जो इसमें जाती हैं वह, और जो कराती हैं वह सभी को प्रायः दुराचारिणी ही समझना चाहिये क्योंकि चक्की में

गया हुआ दाना बिना चोट खाये साबित नहीं निकल सकता। अच्छी २ सुशीला स्त्रियें ऐसी ऐसी बेहूदा कुचालें देख कर बदचलन बन जाती हैं हाय ! हाय ! शोक क्या पुरुषवर्ग अन्धे हो गये जो सब कुछ देखते जानतेहुए भी प्रबन्ध नहीं कर सकते। क्या किसी के घर खोड़िया हो और वह घर बेदाग़ बचे यह सम्भव है? कदापि नहीं, अवश्य ही रंग लाता है। जब तक इन भद्दी बेहूदी और निर्लज्जता शीलव्रत को नष्ट करने वाली चालों का सुधार नहीं किया जावेगा कदापि व्यभिचार की रोक नहीं हो सकेगी। अतएव आप को ध्यान दिलाया जाता है कि ऐसी चालों को शीघ्र रोक कर वीर्यरक्षा कीजिये।

तीजों का तिवहार।

दोहा

श्रावण मास में होत है, तीजों का तिवहार।
महा पाप की खान है, बढ़ता है व्यभिचार॥

मित्रवर! देखिये इस तिवहार के बारे में देशसुधारकों की क्या सम्मति है; सचमुच इन तिवहारों से बड़ी भारी

हानि होती है। अपने ही हाथों अपनी सन्तान के ब्रह्मचर्य का सत्यानाश करने को ऐसी ही कुचालें हैं और ऐसे ही पर्व हैं जिन पर एक देशसुधारक ने कहा भी है:-

राग झूलना।

तीजों एक पर्व विरह का है, मिल गावें विरह सगरी नारी।
पति की सब याद पुकारत हैं, अबला सुन सीखें हैं जारी।
पीहर सिंगार बनावत है, झूलत हैं बाप घर हत्यारी।
धिक्कार चाल ये खोटी है, जो बढ़े देश में व्यभिचारी॥

कीजिये विचार, कैसी खोटी चाल है। यह तिवहार श्रावण शुक्ला तृतीया (३) को होता है। एक दो मास पहले से अन्यथा श्रावण लगते ही से तो अवश्य झूला झूलने की धूम मच जाती है। कहीं २ तीजों के एक दो दिन पहले से ये मस्ती सूझती है परन्तु विष थोड़ा और बहुत सब फल चखने वाला होता है। इन दिनों में स्त्रियां खूब सज धज कर सोलह सिंगार बना वे रसीले गायन गाती हैं जो इतने कोरे और लच्छेदार होते हैं कि सुनने वाले कामान्ध हो जाते हैं। छोटी २ कन्याएं

और विधओं पर वह खोटा प्रभाव होता है कि लेखनी से बाहर है। कहां तक लिखूं आप स्वयम् विचार सकते हैं कि जब विरह के गायन जो आगे चल कर नमूना मात्र लिखे जावेंगे गाये जाते हैं तो भला कुंवारी कन्याएं और भोली भाली छोटी २ लड़कियों की ही कब तक खैर हो सकती है। जैसा देखेंगी अवश्य सीखेंगी। सब से बड़ी इस तिवहार में निर्लज्जता बेहयाई कुशील सिखाने वाली ये चाल होती है कि अधिकांश माता पितादि परिवार के लोग अपनी २ कन्याओं को इस तिवहार से एक एक दो दो मास पहले अन्यथा पर्व पर तो अवश्य ही पति से पृथक् कर अपने गृह पर बुला लेने के अतिरिक्त अश्लील गायन गाने की भी छूट दे देते हैं। वे लड़कियां माता पिता के घर जाकर बहुओं से भी विशेष विरह की तान उड़ाती हैं। कर कर सोलह सिंगार खूब सज धज कर वो सुरीली ध्वनि से पति वियोग विरह के बारह मासे अलापती हैं कि सुनने वाले यों ही कुशीलता के समुद्र में डूब जाते हैं और गाने वालियों पर

जो प्रभाव पड़ता है उसका पाठक वर्ग स्वयम् हिसाब लगालें कि वे ऐसे ऐसे विरह के गायन गाकर कहां तक शील की रक्षा कर सकेंगी । क्या जड़बुद्धि माता पितादि परिवार के लोग उनके वे लज्जा जनक गीत सुन कर भी कानों में तैल डाले मौन बैठे रहेंगे परन्तु निर्बुद्धि मूर्ख लोग इस दुष्ट चाल को रोकने का प्रयत्न नहीं करेंगे? शोक!

जिन गायनों को मुझे उपदेश निमित्त पाठकवर्ग को सुझाने के वास्ते लिखते लज्जा आती है पर उन निर्लज्ज स्त्रियों को गाते हुवे और पुरानी लकीर के फकीर चाहे कितनी ही हानि उठानी पड़े पहिले करते आये सोही करेंगे ऐसे अधम जीवों को सुनते हुए लज्जा भी नहीं आती। भले ही जिस समय आप लोग घर जावें तब चाहें तुम्हें दिखाने वास्ते कोई सीधे साधे गायन गाने लगें वा चुप हो जावें पर आगे पीछे जाकर देखो तो पूरा चाल ढाल ज्ञात हो। यदि एक बारहमासी भी पूरी सुनलो तो कान तक के कीड़े झड़ पड़ें। अच्छा लो जिस को वे बहुत ढका गायन समझती हैं उस की दो ही कली

सुन लीजिये और इसी से अनुमान लगाइये कि सम्पूर्ण गायन से कैसा भयानक प्रभाव होगा। "अषाढ़ मास घटा घन घोरं, विजली मत चमके चुप होरे। पीतम ना हैं मेरे धोरे, नाहक मर जाऊं विष खाय के"॥ इत्यादि

कीजिये विचार, कुछ है ब्रह्मचर्य की आशा? क्या ऐसे ऐसे गायनों से शील की रक्षा होना सम्भव है? कदापि नहीं। जहां कली कली से विरह टपकता है वहां ब्रह्मचर्य की रक्षा का क्या काम। सुनने वाले और गाने-वालियों का शीलव्रत नष्ट न भी होता हो तो हो जावे क्योंकि यह शिक्षा ही व्यभिचार की जड़ है, इस का बन्द होना आवश्यकीय बात है।

परन्तु यहां तो विशेष कर सुसराल से पुत्रियों को इसी उत्तमशिक्षा के वास्ते बाप के घर बुलाया जाता है। प्रमाणित हुआ इस रोग की जड़ तुम ही नहीं तो और कौन है? वह मरने तक को तैयार तुमको दया नहीं। शोक! और भी नमूना सुन लीजिये कि जिस से आप को पूरा विश्वास हो जावेगा पर क्या करूं लिखते हुए

लेखनी थर्राती है लेख अश्लील हुआ जाता है और विना कहे उपदेश का प्रभाव नहीं होता है इस से विवश हो दिल कड़ा करके और भी थोड़ासा लिखे देता हूं:—

दोहा

वरखा ऋत वैरन भई, चित को नहीं है चैन ।
लगते ही मास असाढ़ के, लगी विरह दुख दैन ॥
एक जी लगी विरह दुख दैन,
नहीं पलभर को मुझको चैन ।
पिया बिन तड़फू हूं दिन रैन,
कहन किस पर भेजूं लिखवाय के ॥
कह नहीं सकूं मरम कुछ तनका,
झगड़ा लगा मुझे साजन का ।
छिन छिन छीजे रङ्ग जोवन का,
उसको राखूं कहां संगवाय के ॥
पपीया मत हूक सुनावे,
कोयल की कूक नहीं भावे ।
विरहाऽनल गात जलावे,
मुझे याद पिया की आवे ॥

ज्यों ज्यों शीतल पवन चले है,

तन में दूनी अगन बले है।

ग़म से सारा जिस्म जले है,

स्वामी वेग खबर लो आयके॥

साल महीने गिन गिन काटूं,

हूं मुशकल से दिन दिन काटूं।

बस अगाड़ी लिखने का किञ्चित् साहस और बल नहीं है। पाठकवर्ग! कीजिये विचार, पुत्रियों को सुसराल से बुलाकर क्या बढ़िया शिक्षा दी जाती है। क्या इस से वह कोरी बच जावेगी, क्या ऐसी शिक्षा से वह सभ्यता सीखेंगी, ऐसे २ गायन गाकर शील की रक्षा कर सकेंगी? यदि नहीं कर सकेंगी तो उन माता पितादिको जो घर पर पुत्रियोंको बुलाकर दुराचारणी होने की शिक्षा देते हैं, डूब मरना चाहिये। धिक्कार है ऐसे कन्या पक्षवालों पर जो अपनी पुत्रियों को कुमार्ग में फंसती हुई को नहीं रोकते किन्तु उलटा उन को निज घर पर बुला कुचाल सीखने का अवसर देते हैं शर्म और लज्जा आनी चाहिये।

और बुरा यह है कि पति पक्ष वाले भी जब लड़कियां पीहर में हों सिंधारा भेजते हैं--उस में झूल पटड़ी, बिन्दी सुरमा, मिस्सी आदि सिंगार बनाने की सामिग्री होती है। कितने अंधेर की बात है कि स्वयम् उस को सिंगार बनाने और झूलने की आज्ञा दी जाती है। यदि कहा जावे कि सिवाय जड़ बुद्धियों के ऐसा कोई काम कर सकता है तो मेरे विचार से कदापि नहीं। क्या आवश्यकता है जो कामरूपी अग्निमें सिंधारे रूपी घृत डालना, बैठी बिठाई को कामाग्नि भड़काने का सामान भेज देना ? भला कब हो सकता है कि पीहर में शृङ्गार बनावे और सुशीला बनी रहे ? प्रसिद्ध बात है कि इस भव में पति से सदा के बिछड़ने [मृत्यु होने] पर सब सिंगार तज दिया जाता है, तो भला क्या कारण है जो थोड़े समय को पृथक् होने पर थोड़ा सिंगार न छोड़ा जावे। वास्तविक में प्रत्यक्ष सिंगार दो प्रकार के होते हैं--एक तो सुहाग के साधारण आभूषण वस्त्रादि और द्वितीय पति मिलाप के बिन्दी,

सुरमा, मिस्सी, पटिया आदि की सजावट; सो यहां पति मिलाप के शृङ्गार की मनाई की जाती है। क्योंकि ये कामाग्नि बढ़ाने वाले होते हैं। जब पति का वियोग (यानी कुछ समय को पति से जुदाई) है, तो शृङ्गार किसका ? नहीं मालूम बुद्धि के शत्रु क्यों ऐसी वस्तुओं का सिंधारा भेज कर उस अबला के शील का सत्यानाश करते हैं। यदि कहा जावे कि हम तो शील का सत्यानाश नहीं करते तो हम पूछते हैं कि उपरोक्त सामान क्या झक मारने को भेजते हो ? वह झूल पटड़ी और शृङ्गार का सामान क्या अर्थ रखता है ? प्रत्यक्ष सिद्ध है कि आप की भी आज्ञा है कि खूब सिंगार करो और कुतूहल के साथ झूलो नहीं तो सामान भेजने की आवश्यकता ही क्या थी। शोक है इस बुद्धि पर जो बिना अन्तिम परिणाम विचारे झट दुराचरण सिखाने के सामान भेज देते हैं। भला जिस कुतूहल के साथ झूला जाता है क्या बुद्धिमानों के काम हैं ? नहीं नहीं कदापि नहीं। बुद्धिमानों के नहीं, बुद्धिहीन, निर्लज्ज, बेशर्म

वेश्याओं के काम हैं। बुद्धिमानों को तो श्रीमान् कलिकाल सर्वज्ञ जैनाचार्य श्री१००८ श्रीमान् हेमचन्द्राचार्य जी महाराज योगाशास्त्र में कुतूहल के साथ बहुत से कामों की मनाई करते हुए भूलने का भी साफ निषेध (मनाई) करते हैं। देखो योगशास्त्र सन् १८६६ का छपा पृष्ठ २५०।

कुतूहलाद् गीत-नृत्य नाटकादि निरीक्षणम्।
कामशास्त्र प्रसक्तिश्च द्यूतमद्यादिसेवनम् ॥ ७८ ॥
जलक्रीडांदोलनादि विनोदो जन्तुयोधनम्।
रिपोः सुतादिना वैरं भक्तस्त्री देशराट् कथाः ॥ ७९ ॥
रोगमार्गश्रमौ मुक्त्वा स्वापश्च सकलां निशाम्।
एवमादि परिहरेत् प्रमादाचरणं सुधीः ॥ ८० ॥

प्यारे पाठको! विचार करलीजिये कि ऐसे भूलने की जैनाचार्यों की आज्ञा नहीं है और प्रत्यक्ष में सिवाय व्यभिचार बढ़ने के कोई लाभ नहीं दीखता तो हे मित्र वर! ऐसी कुचालों का जड़मूल से क्यों नहीं निकन्दन कर देते हो जो शील की बाढ़ पुष्ट होकर वीर्य रक्षा हो

मैं इस पर्व की और भी पोल खोलने को उद्यत हूं पर लेख अश्लील होजाने के भय से इसका भार आप ही पर छोड़ता हूं कि लाभ हानि सोच कर देश वासियोंको ब्रह्मचर्य से भ्रष्ट होते हुवों को रोको और जो जो ऐसी कुचालें ब्रह्मचर्य का नाश करने वाली हैं शीघ्र उनको दमन करते हुए शीलव्रत की रक्षा कीजिये जिससे इस भव और परभव दोनों स्थान में कल्याण हो।

होली का पर्व

यह होली का पर्व इस लोक और परलोक दोनों में नरककुण्ड में डुबोने वाला व्यभिचार का मूल (आदि कारण) है इस में अच्छे २ घरों की बहू बेटियों की की छिन भर में मिट्टी पलीत होती है। जितनी अश्लील भाषा, गन्दे गायन और निर्लज्जता के अकार्य इस में होते हैं कदाचित् ही कहीं दूसरे स्थान पर होते हों।

देश देश की जुदी चाल है पर सब जगह एक से एक बढ़िया शील को नष्ट करने वाली निराली ही चालें होती है, सम्भव नहीं कि कोई सभ्य भी उस रीति में

घुस कर विना सने साफ़ निकल आवे, अवश्य ही दाग़ी होजाता है। भंग का रंग जमा, माजूमादिक नशे में अन्धे हुवे, जो जी में आया निर्लज्जता के गायन गाते हर एक से हंसी ठठ्ठा करते बकते फिरते हैं। उन्हें यह ध्यान नहीं है कि हम किस से ठठोली करते हैं और उस से रिश्ते नाते में हम से क्या सम्बन्ध है। उन उन्मत्तों को नशे में यह भी नहीं सूझता कि ये घर की है वा पर की, जो सामाने पड़गई लगे ठठोली करने। कहीं कहीं गैर निकलती है, इस का ढंग निराला है। स्त्रियां कोठों पर चढ़ कर वह लच्छेदार कोरी कोरी सीधी पुरुषों को भिन्नाती हैं कि सभ्य पुरुष को वहां खड़ा होना भी भारी बन जावे परन्तु वहां तो निर्लज्ज वेहया वेशर्म जाते हैं, खूब उल्टी सीधी नीचे ही खड़े खड़े चलते फिरते वेतुकी सुनाते हैं और कुंकुमे जो गुलाल के बने होते हैं जो लगते ही शरीर पर गुलाल बिखर जावे खूब ताक ताक कर स्त्रियों के उन स्थानों पर मारते हैं कि जिनका नाम लेते मुझे आती है पर उनको

अपने परिवार के लोगों के सामने ऐसे दुराचरण सेवते भी लज्जा नहीं आती !

भला ऐसे कुकर्म कर के शीलव्रत ब्रह्मचर्य की आशा करना आकाश के तारे पकड़ने के सदृश नहीं तो और क्या है ? उन भले मानसों को लज्जा आनी चाहिये कि जो स्वयम् शील नाश करते हुए दूसरों के भी ब्रह्मचर्य की रेढ़ करते हैं, शोक है कि जो अपनी स्त्रियों को इस प्रकार असभ्यता और कुशीलता में प्रवृत्त होते हुए देख कर भी नहीं लजाते और लज्जावानों में अपने को सब से बड़ा डिमधारी गिनते हैं। क्या यह चाल सभ्यता सिखाने वाली है ! मैं बलपूर्वक कहूंगा कि दुराचार सिखाने वाली और सिखाना भी क्या जब पबलिक में साफ़ निशानेबाजी हो रही है तो कहना पड़ेगा कि प्रकट ही होती है, धिक्कार है ऐसी प्रथाओं पर जो, साधारण उत्सवों में लज्जा उतारी जाय, शील कलङ्कित किया जावे और फिर भी आबरूदार कहे जावें।

क्याही अच्छा हो कि उन पुरुष और स्त्रियों को जाति

की ओर से कुछ शिक्षा दी जावे अन्यथा असम्भव है कि जहां ऐसी भद्दी गन्दी प्रथायें हों और वहां एक भी चौथे व्रत का धारी मिले। डंके की चोट कहना होगा कि अवश्य ही कुशीलये होंगे। अन्यथा आंखों के अन्धे अपने सामने ऐसे खोटे कुकर्म शीलभङ्ग कराने वाले दुराचरण होते हुवे भी क्यों नहीं रोकते ? शर्म !

कहीं गेर खेली जाती हैं—एक कढ़ाव या कुण्ड में पानी भर कर बहुत सी स्त्रियां उस पानी के चारों ओर कपड़े के सोटे वा सन के कोई कोई घोड़े के हन्टर [ताजने] ही लेकर मैदान में आ डटती हैं। पुरुषवर्ग डोलची झाड़ोला पानी से भर भर के जो घर से लाते हैं उन स्त्रियों पर मारते हैं और बदले में स्त्रियाँ हन्टर जमाती हैं। जल समाप्त होने पर उसी कढ़ाव में से स्त्रियों की आंख बचा कर भाग कर पानी भर लाते हैं। पानी भरते भरते पर एक दो हन्टर (सोटे) पड़ भी जाते हैं, जो बराबर पिटता भी जावे और पानी भी भर लावे वह शूरमा गिना जाता है। शाबास है रे शूरमा ! जो

स्त्रियों के हाथ से पिटते जावें और शूरमा भी कहलावें, यह वही कहावत है:—

लात मार कर पापड़ तोड़ा, कच्चा तोड़ा सूत ।
मरी मक्खी के पंख उखाड़े, हम बहादुर पूत ॥

उन्हीं बहादुरों में के यह भी सपूत होते हैं । घण्टों यही मार पीट चलती है । जब तक कि कढ़ाव का पानी न निबट जावे पुरुष स्त्रियें मैदान, गली, कूचों में भागे २ फिरते हैं, वे पानी मारने को और वे हन्टर झाड़ने को । यदि भागते २ दूरी पर ओट में निकल गये और हो गई मुठभेड़ पानी फेंका मार खाई और अपना काम बना लिया । पिटे तो सही पर दूसरों की मर्यादा बिगाड़ दी और छीना झपटी तो जब दोनों ओर से पानी और हन्टर का वार होता है होजावे उस की तो पुकार ही नहीं है । हा शोक २ ! ! !

कहीं सुसराल में जाकर साली सलहज़ों के साथ खूब कृष्णलीला होती है । वहां भी इसी प्रकार होली देखी जाती है । कहीं लज्जा के मारे मकानों की छत पर ये

लीला रचाते हैं। वहां भागने को भी स्थान नहीं खूब शील की सफाई होती है। जैसी दुर्दशा स्त्रीगणकी होती है लेखनी से बाहर है। यदि हो महीन वस्त्र (कपड़े) तो उनका वहां और भी देवी का स्वरूप दीखता है। कीजिये विचार, क्या यह लज्जावान् और मर्यादा रखने वाले के काम हैं? नहीं २ ये सारे कार्य निर्लज्ज और बेगैरत मनुष्यों के हैं। नहीं मालुम हमारे भाई शील वान् और सभ्य बनने का पक्ष करनेहारे क्यों अन्धे हुवे इस कुचाल को चलाये जाते हैं। जब जैन ग्रन्थ पर्युषणादि पर्वकथा में इस पर्व की उत्पत्ति बता निषेध किया हुवा है तो क्यों नहीं इस का सर्वथा त्याग किया जाता है, परन्तु प्रतिकूल इसके इन कुरीतियों को सतेज करते हुवे व्यभिचार का गदर मचा रहे हैं, शोक!

बहुत से नगरों में इस पर्व के मेले लगाये जाते हैं पुरुष स्त्रियों का रूप बना कर, ले हाथ में मूसल अश्लील संकेत करते हुवे बाजारों में निकलेंगे, कहीं स्वांग तमाशों में लड़के स्त्री का रूप बना सैन चलाएंगे, कहीं दो मनुष्य

मिल स्त्री पुरुषों का स्वांग भर ऊंट पर बैठ मेले में आते हैं और सरे बाजार स्त्रियों को दिखा दिखा कर असभ्य अश्लील गधा मस्ती करते हैं कि जिस को देखकर निर्लज्ज को भी लज्जा आ जावे पर वे किञ्चित् भी नहीं लजाते कहिये मित्रो ! क्या इन कर्त्तव्यों को देख स्त्रियां बच्चे सुशीलता सीखेंगे ? अवश्य ही मानना पड़ेगा कि उन्हें देख दुराचारी बनेंगे पर शोक है कि निर्लज्ज पुरुष ऐसे मेलों में भी स्त्रियाँ भेजते नहीं लजाते । क्या उपरोक्त लीलाएं देखकर सन्तति और नारीसमाज पर प्रभाव न होगा मित्रवर ! मानना पड़ेगा कि अवश्य होगा । सम्भव नहीं कि उपरोक्त कुचालें चलती रहें और सन्तान सभ्यता सीखे । अवश्य असभ्य और निर्लज्ज बनेगी और वह खोटा प्रभाव पड़ेगा कि देख सुन कर हृदय कम्पायमान होगा । इसीसे मित्रवर ! एक भजन सुना कर पहिले ही सावधान करते हैं कि अब भी चेतो और इन व्यभिचार फैलाने वाली कुरीतियां बन्दकर देश का उपकार करो ।

चाल— बूंटी लाने का कैसा बहाना हुवा है ॥

होली खेलन का कैसा बहाना हुवा ॥ टेक ॥
शील खोने को तत्पर ज़माना हुवा ॥
बकें गाली वे पर्द, मिल नारी और मर्द ।
रंग में हो जाते ज़र्द, उडा राख और गर्द ॥
बनके पागल ज़माना दिवाना हुवा ॥ [होली खेलन०]१
कोटे चढ़ चढ़ के नार, गावें पुरुषों को गार ।
पुरुष कुमकुम दें मार, इससे बढ़ता व्यभिचार ॥
ब्रह्मचर्य का मुशकिल निभाना हुवा ॥ [होली खेलन०] २
गेर खेलन का तार, पुरुष पानी दें मार ।
नारी हन्टर दें झार, निर्लज्जी आचार ॥
भगा दौड़ी में नंगा हो जाना हुवा ॥ [होली खेलन०]३
खेलें भाभी संग जाय, साली सलजों में धाय ।
वहां करते अन्याय, जीया कहते घबराय ॥
ब्रह्मचर्य की राख उड़ाना हुवा ॥ [होली खेलन०] ४
पुरुष कर नारी भेष, स्वांग खेलें हमेश ।
नहीं लज्जा है लेश, कैसे सुधरे ये देश ॥
खोटी चालों से शील डुबाना हुवा ॥ [होली खेलन०] ५

घने होंवे कुकर्म, खोंवे नर नारी धर्म ।
नहीं रहे लाज शर्म, नहीं जाने कुछ मर्म ॥
निर्लज्जों का खेल खिलाना हुवा ॥ [होली खेलन०] ६
कहे जैनी हर वार, निर्लज्जी दरबार ।
लगे होली में यार, बढ़े खोटा प्रचार ॥
कठिन इससे अब देश बचाना हुआ ॥ [होली खेलन०] ७

पिता के घर पुत्रियों का विशेष रहना ।

यह चाल इस समय महा अन्धेर बढ़ाने वाली है । पुत्र पुत्री दोनों को व्यभिचार सिखाने में क्लोरोफार्म से भी बढ़कर शीघ्र प्रभाव जमाने वाली है जिसमें भी युवा अवस्थामें ऐसा होना उच्च श्रेणी का दुराचरण सिखाने की शिक्षा देना है । अपने हाथों सन्तति को कुकर्म सिखाना इसी का नाम है । प्यारे पाठकवर्ग ! विचारिये तो सही कि स्त्रियों के पिता के घर विशेष रखने में सिवा हानि के लाभ ही क्या है ? लाभ केवल यह है कि मेल मिलाप वा दुःख दर्द में सम्मिलित होना सो थोड़े समय

रहने से भी हो सकता है फिर नहीं मालूम बहुत दिनों तक घर पर पुत्रियों को रखने से कौनसा बढ़िया लाभ है। सच पूछो तो युवावस्था में ऐसा होना महा अन्धेर खाता है। ऐसा समय उपस्थित होने पर पुत्र और पुत्रियां अधिकाँश दुराचारी हो जाते हैं कि जिन का विचार पुराने लकीर के फकीरों को सुपने में भी नहीं होता। स्त्रीगण के वास्ते तो ये सब से श्रेष्ठ अवसर है। क्योंकि स्वतन्त्रता पूरी मिल जाती है। काम कुछ करना पड़ता नहीं, ठाली बैठे यही उन्माद सूझते हैं जहां बाप के घर पहुंची सो वहांकी सब स्त्रियों पर जनरल तो वैसे ही बन गई फिर उसे रोकता ही कौन है। स्वतन्त्रतापूर्वक जो दिल चाहा करती है। हरएक के घर में वा बिरादरी आदिक में घूमती, बातें बनातीं, कुलांछन सीखती फिरती हैं और ऐसा अधिकांश देखा भी गया है क्योंकि बाप के घर पर पुत्रियों को किसी प्रकार की रोक टोक नहीं हुवा करती। किसी सभ्य परिवार में किंचित् ध्यान रक्खा जावे तो दूसरी बात है परन्तु अधिकांश

मेहल्ले (पाड़े) में अवश्य वेरोक टोक भागी २ फिरती हैं, वाहर भी अकेली जाती हैं, पास पड़ोसी के मकानोंमें दिन रात घुसी रहती हैं, सिंगार वनाती हैं झूले वारह मासे लच्छेदार उड़ाती हैं, नाई धीमरादि नौकरोंके साथ मेले आदि देखने जाती हैं, वाहर अकेली वेपर्दे विचरती है वुरे सांग तमाशे थियेटरों में जाती हैं, विवाह शादियोंमें दूसरे के घर पर ही सो जाती हैं एकान्त में पुरुषों से वार्तालाप भी करती ही हैं खूब हँसी दिल्लगी होती है। कहां तक गिनाऊं बहुत सी मसालेदार वातें हैं।

जब यहां तक डंके की चोट वाप के घर पुत्रियों को स्वतन्त्रता है जो उसको दूसरी जगह मिलनी असम्भव है तो भला कब तक ब्रह्मचर्य की रक्षा होगी ? अवश्य ही व्यभिचारिणी वनेंगी।

यदि कोई सभ्य भी हुई तो लज्जाके मारे यह तो रही कहने से कि मुझे सुसराल ही पति के पास भेजदो किंतु हां जव कामज्वर सताता है तब जो कुछ ऊटपटाँग सूझता है उस का भार आप ही पर छोड़ता हूं विचार

कर लीजिये कि किस प्रकार की गुप्त लीलायें होती हैं। उस दशा में शीलव्रत पालन करना सम्भव है वा असम्भव, सो पाठक विचार लें।

शोक है कि माता पितादि अपनी सन्तति का किञ्चित् भी ध्यान नहीं रखते और वृथा वीर्य लुटवाने में तत्पर रहते हैं। पुत्रों का हाल इस से भी बढ़कर लज्जा जनक है। कहां तक बखान करूं हस्तकर्म आदि अनेक प्रकार से कुकर्म सेवते हुवे अनेक बीमारियों का घर बना लेते हैं कि जिसका अन्तिम परिणाम महा भयंकर दुःखदायी हो जाता है।

आश्चर्य है कि हमारे भाई अब भी इस दुराचार को नहीं छोड़ते। और बिना अन्तिम परिणाम सोचे दिन रात कुचालोंकी उन्नति और धर्मकी अवनति कर रहे हैं यद्यपि पढ़ा लिखा दल अब भी बहुत बचता है परन्तु 'दादा वचन प्रमाण' की लकीर पर चलने वाले कुपढ़ों से तंग हैं। क्या ही अच्छा हो कि भारत में घर घर विद्या का प्रचार करने का साधन शीघ्र खोल कर ऐसी दुष्ट कुचालों को

रोका जावे जिस से पतिव्रतधर्म की रक्षा होते हुए व्यभिचार का भी मूल सहित नाश हो।

नौकरों के साथ पीहर सुसराल जाना आना।

यह रीति महा व्यभिचार की खान है। कैसी भद्दी प्रथा है, कि स्त्रियों व कन्याओं को नौकरों के साथ बुला भेजते हैं। वर वधू दोनों पक्ष वाले ऐसा ही वर्ताव करते रहते हैं। जब किसी को आवश्यकता हुई दास भेज कर बुला ली उस कन्या या स्त्री के शीलव्रत की कैसे रक्षा होगी इसका किसी पक्ष वाले को किञ्चित् भी ध्यान नहीं है। भला यह कैसे संभव हो सकता है कि वारूद के ढेर की अग्नि रक्षा कर सके? आग फूंस का वैर, समय पाते ही सिलगते हैं। नौकरों को इस से वढ़िया अवसर ही क्या हाथ आवेगा? स्त्रीगण लज्जा के मारे घर पर आकर भी न कहेंगी और नौकरों का काम वना। सारा मार्ग उन्हीं का है जो चाहे सो करें, साथ में मालिक तो है ही नहीं जो भय हो। यदि कोई सुशीला नेक चलन है तो उसने वहीं

दुष्ट के चपत रसीद की और घर पर आकर सारा भांडा फोड़ दिया, मगर फिर भी सिवाय उस नौकर को नौकरी से पृथक् करने के आप क्या कर सकते हैं पर उस बेचारी अबला का तो शील कलंकित हुआ और अधिकांश स्त्रियाँ स्वयम् ही ऐसा अवसर टटोलती रहती हैं क्योंकि इस स्त्रीजाति का स्वभाव ही ऐसा है जो नीचों से भी प्रीति कर लेती हैं। श्रीमान् शुभचन्द्राचार्य्य भी ज्ञानार्णव संवत् १९६१ के छपे पृ० १४२ में ऐसाही कहते हैं:—

सन्ध्येव क्षणरागाढ्या निम्नगेवाधरप्रिया।
वक्रा बालेन्दुलेखेव भवन्ति नियतं स्त्रियः॥ ७॥

अर्थ—ये स्त्रियें सन्ध्या के समान क्षण भर रागसहित रहने वाली (क्षण भर प्रीति रखने वाली) हैं और नदी के समान अधर प्रिया हैं अर्थात् जैसे नदी नीची भूमि की ओर जाती है उसी प्रकार स्त्रियें भी प्रायः नीच पुरुष से रमण करने वाली होती हैं। तथा द्वितीया के चन्द्रमा के समान वक्र (टेढ़ी) रहती हैं अर्थात् स्त्रियें हृदय में कपट भाव अवश्य रखती हैं।

यदि मान लो कि साथ में नौकर नौकरानी दो जावें तो क्या हानि है पर विचार करने से विदित होता है कि नौकरानी का मिल जाना बहुत कुछ संभव है और न भी मिले तो हर समय उस के पास कहां तक रह सकती है। क्या शौच न जावेगी, लघुशंका न करेगी, क्या निद्रा न लेवेगी, क्या २ काम न करेगी? यदि करेगी तो नौकरनी से आंख बची और होगई हाथापाही। एक क्षण भर में कुल कलंकित होता है तो वहां मज़दूरनी के बचाव से बहुत समय मिलता है। इसी वास्ते स्त्रियों की ओर से बुद्धिमान् पुरुषों को सदैव शंका करनी पड़े उस में क्या आश्चर्य है क्योंकि शुभचन्द्राचार्य रचित ज्ञानार्णव के पृ० १४३ में लिखा है:—

> धूमावल्य इवाशंक्याः कुर्वन्ति मलिनं क्षणात्।
> मदनोन्मादसंभ्रान्ता योषितः स्वकुलं गृहम् ॥ ८ ॥

अर्थ—मदन के वेग से उन्मादयुक्त होकर स्त्रियां अपने कुल और घर को क्षण भर में मलिन (कलंकित) कर देती हैं इस कारण धूमावली के समान आशंका करने

योग्य हैं। अर्थात् जिस प्रकार धूमावली से घर काला होने की शंका है इसी प्रकार स्त्रियों की ओर से भी शंका रहनी चाहिये ॥ ८ ॥

देखिये पूर्वोक्त विद्वान् की क्या सम्मति है, किञ्चित् भी विश्वास नहीं किया। इस पर भी यदि कोई कहे हमारा नौकर पुराना है तो वे लोग और भी भूल पर हैं क्योंकि वह घर की बातों से विशेष परिचित होता है जिस से और भी प्रलयकाण्ड मचता है। प्रथम तो पहिले से ही दोनों की प्रीति होती है जिसका आगे चल कर खण्डन करेंगे और यदि न भी हो तो क्या हुआ यदि स्त्री व्यभिचारिणी हो तो उस की करी छेड़छाड़ को अपने मालिक की बदनामी समझ के नौकर आकर नहीं कहता यदि मुलाज़िम कुशील है तो स्त्रियां पुराने नौकर का विचार कर मौन होजाती हैं भला फिर बात कहां से खुले, एक दो बार इसी प्रकार ढकी मुसलमानी चली अन्त बदनामी मिल ही जाती है फिर वही कहावत होती है, कि:—

तू ना कहियो मेरी और मैं ना कहूंगा तेरी
पोल पाल में चलने दे बह मज़ेदार हथफेरी ॥

मित्रवर ! आप चाहें कितना ही घोर कराइये हमारा काम समझाने का है सो समय के अनुसार शिक्षा करते हैं, यदि इस पर भी ध्यान नहीं दोगे तो स्मरण रक्खो अब समय वह आगया है कि सन्तानें वर्णसङ्कर होने लगेंगी। क्या आप स्वयम् (खुद) या किसी विशेष आवश्यकीय कार्य समय किसी परिवार के प्रतिष्ठित पुरुषों के साथ कन्या और स्त्रियों को बुलाने और भेजने का कार्य नहीं कर सकते ? यदि कर सकते हो तो क्यों महा घोर व्यभिचार बढ़ाने वाली चालों की उन्नति कर रहे हो ? उचित है कि वर्त्तमान दशा पर ध्यान देकर व्यभिचार बढ़ाने वाले मार्ग बन्द कर सभ्यता का प्रचार करो।

नौकरों का स्त्रियों में जाना।

जिस २ जगह नौकरों को स्त्रियों में जाने की छूट है वहां सदर में ग़दर होता ही रहता है। लाला साहब दूकान पर हैं, घर के सदर में ग़दर है। नौकरों का राज्य है, मन चाहें जिसकी सफ़ाई करदें मार पीछे पुकार ही है। शेष में लाला साहब नौकरी से पृथक् कर दें या

अदालत तक झोंकते फिरें पर एक वार तो काम करने वाला कर ही जाता है। बहुधा स्त्रियें लज्जा के मारे मौन करजाती हैं यह और भी बुरा है इस से व्यभिचारी का साहस बढ़ जाता है! सच तो यह है कि लाला साहब तो हाथ पैरों के आलसी घर जाते आते जी छूटता है, नौकरों के आधीन हैं। रोटी वो दूध भी नौकर घर से लाकर देवें तो काम चले अन्यथा भूखे ही दूकान पर बैठे रहें। सारा काम नौकरों के आधीन है। घरकी अब खबर लेवे कौन, जो घरवालियों के शील की रक्षा हो-वही नौकर शेष है सो जैसी रक्षा करेगा, पाठकवर्ग स्वयम् ही विचार सकते हैं मुझे कहने की आवश्यकता नहीं। वही कहावत चरिताथ होती है कि 'बिल्ली चूहों की रखवाली'। बहुतों को घमण्ड है कि हमारा नौकर तो पुराना होगया, वाह जी खूब प्रमाण पत्र है। यदि इतिहास पढ़ा होता तो पता लगजाता कि पुराने नौकरों ने कितने घरों को नष्ट कर डाला। प्रसिद्ध बात है कि गुरुगोविंदसिंह की स्त्री को दोनों पुत्रों सहित एक

गंगाराम नामी पुराने नौकर ने ही शत्रु के हवाले कर उस घर की सदा के लिये समाप्ति कर दी, जो अन्त में वे दोनों बच्चे बड़ी निर्दयता के साथ जीवित दीवार में चिनाये गये कि जिसका हाल सुनाते रोमांच होता है। हा खेद ! ऐसे एक नहीं अनेक प्रमाण मिल रहे हैं पर हमारे भाई हद से बढ़कर पुराने नौकरों के हाथ में लगाम दे देते हैं और कहते हैं कि यह तो हमारी तरह माता बहन बेटी कहकर बुलाता है। भला यह कुकर्मी कैसे हो सकता है पर वे भोले यह नहीं समझते हैं कि वह सारा आडम्बर हमारे विश्वास जमाने के वास्ते ही पापी जन रचते हैं क्योंकि-" मातृयोनिं परित्यज्य, विहरेत् सर्वयोनिषु" के मानने वाले जब अनेक पुरुष हैं तो उसके नाम लेकर पुकारने पर पुराने नौकर समझ विश्वास कर लेना कौन बुद्धिमानी है।

सच तो यह है कि नौकर जितना पुराना उतना ही धैड़ी होजाता है। नये नौकर से तो आप यत्न पूर्वक ही काम करावेंगे इससे किञ्चित् टेढ़ी भी खीर है परन्तु पुराने

की आप लोग शंका ही नहीं करते। हर प्रकार की स्वतन्त्रता है। कन्या बाल्य अवस्था से उस के साथ प्रीति रखती ही है फिर बड़ी होने पर बड़ी प्रीति में कठिनता ही क्या है घर की स्त्रियां भी सदा का आदमी समझ कर परदा नहीं करतीं। एक न एक दिन चार आंखें होते ही काम बिगड़ जाता है क्योंकि इनका स्वभाव ही नीचों से प्रीति करने का विशेष होता है और ज्ञानार्णव प्रथम खण्ड के पृष्ठ १४७ में लिखा भी है, यथा—

कुल जाति गुण भ्रष्टं निकृष्टं दुश्चेष्टितम्।
अस्पृश्यमधमं प्रायो मन्ये स्त्रीणां प्रियं नरम्॥ ३३॥

अर्थ—मैं ऐसा मानता हूं कि कुल, जाति, गुण से भ्रष्ट, निकृष्ट, दुश्चरित्र, अस्पृश्य और नीच पुरुष ही स्त्रियों को प्रिय होता है क्योंकि प्रायः ऐसा ही देखने में आता है कि स्त्रियां उत्तम पुरुष को छोड़, नीच से ही प्रीति कर लेती हैं॥ ३३॥

प्रिय पाठको! विचार कीजिये कि जब विद्वान् लोग स्त्रियों की ऐसी प्रकृति ही बताते हैं और नौकरों का हर

समय घर में आने जाने के अतिरिक्त उनका ही राज्य है तो भला जब दोनों की स्वतन्त्रता हो गई तो डर किस का है, अवश्य ही शीलव्रत का सत्यानाश होगा। क्या आप लोग अब भी घर के अंदर में ग़दर होता देख कर भी सोते ही रहोगे? अच्छा हो शीघ्र जागो और इन कुचालों का सुधार करो अन्यथा याद रक्खो वर्णसङ्कर संतान देखने का समय निकट है।

स्त्री पुरुषों की एकान्त में वार्ता।

बहुत से पापीजन अपने ग्राम की कन्याओं की श्वसुराल में जाते हैं तथा तीर्थाटन पर्यटन में कहीं मिल जाते हैं तो तुरन्त श्वसुराल वालों से कह कर पर्दा करा लेते हैं कि हमको अमुक कन्या से मिलना है। वहां एकांत पाकर हंसी ठट्ठा (मसखरी) संभाषण कर चले आते हैं। कीजिये विचार, कितने अंधेर की बात है कि जान बूझ कर व्यभिचारी को अवसर देकर व्यभिचार बढ़ाया जाता है। कितनी लज्जा की बात है और शास्त्रों में साफ़ ऐसी एकांत की छेड़ छाड़ करने वाले को अप-

राषी कहा है । देखो अर्हन्नीति वीर सम्वत् २४३२ की छपी पृष्ठ २१०

परांगनाभिः संलापं यः कुर्याद्रहसि स्थितः ।
स दंड्यो भूभुजा दूर्णमावेश्यस्तस्करालये ॥ ४ ॥

अर्थ–जो मनुष्य एकान्त में दूसरे की स्त्रियों के साथ वार्तालाप करे, तो राजा को चाहिये कि उसे दंड दे और शीघ्र ही बन्दीखाने में डाल देवे ॥ ४ ॥

पर आप लोग अन्धे होकर कुछ नहीं विचारते कि हमारे पास आचार्य्य और शास्त्रों की क्या आज्ञा है और हम करते क्या हैं ? इतना तो सोचना उचित है कि जो पुरुष उधर का कन्या से जो आपके यहां स्त्रीकोटि में है नाम लेकर मिलना चाहता है वह उस से मिलने का भी अधिकारी है वा नहीं ? प्रतिकूल इस के चाहे दूर के लग्गे पत्ते का ही क्यों न हो, चाहे मुलाकाती कन्या के ग्राम का ही हो चाहे कोई जाति भी हो जहां किसी ने कन्या का नाम लेकर मिलना चाहा और परदे के वास्ते कहा तो तुरन्त आंखों के अंधे लकीर के फकीर दूसरी स्त्रियों को हटा, परदा करा,

उन दोनों को एकांत स्थान में भेज देते हैं। वहां अकेली पाकर खूब छेड़ छाड़ होती है। सैकड़ों पतिव्रताओं का पतिव्रत खंडित होता है। यदि दोनों राजी हों तो इस से उत्तम पापियों को अवसर ही क्या मिल सकता है। यदि न भी हो तो लज्जा के मारे बाहर निकल कहती ही कौन है ? मूर्ख स्त्रियां तो अपनी और पीहर की बदनामी के मारे नहीं कहतीं और दुष्टात्मा पुरुषों का यह ढंग ही मिलने का है बल्कि यहां तक कि आंगी ओढ़ना रुपया तक दे आते हैं जो और भी मेल बढ़ता जावे और दुर्गुण प्रकट न हो और कुछ लालच भी लगता जावे, लोग भी बनावा न समझें।

लज्जा का स्थान है कि घर वाले इतना भी ध्यान नहीं करते कि माल व्यर्थ क्यों घर में आता है। धिक्कार है ऐसी प्रथाओं पर कि जहां स्त्रियों की लज्जा बलात्कार ज़बरदस्ती से जावे। मान लो कोई सुशीला है और उसने किसी प्रकार से उस समय शील की रक्षा करली पर आगामीकाल क्या,-उसकी मन की प्रकृति भी गन्दी होजाती है, कभी

मन चलायमान हुवा और पहले कर्त्तव्यों का स्मरण कर उसी रोग के चक्कर में फंस जाती है और फिर देखा देखी समस्त परिवार ही इस कुचाल में डूब जाता है। अति आश्चर्य यह है कि हमारे भाई क्यों अन्धे हुए ऐसी कुचालों को वंद नहीं करते कि जिससे अनेक हानियां होनी सम्भव हैं। मान लो हंसी ठट्ठा कुछ भी नहीं है तो भी जैनाचार्य्यों का सिद्धान्त है कि स्त्री पुरुषों को कदापि एकान्त में वार्त्तालाप नहीं करनी चाहिये। यहां तक कि जिस गृह में चित्राम की स्त्री बनी होवे उस गृह में भी ब्रह्मचारी न रहे, जिस स्थान पर स्त्री वैठी हो उस स्थान पर भी उसके जाने पर दो घड़ी तक ब्रह्मचारी न वैठे। देखो नो वाड़ ब्रह्मचर्य्य व्योरेवार कि चौथे व्रत के वास्ते कितना रोका दिया है तो फिर जानते पूछते क्यों डुबकी खाते हैं।

यदि मिलना ही है तो एक दूसरी मजदूरन [नौकरनी] सहेली कोई भी हो दूसरी स्त्री उन दोनों के पास रखना चाहिये या किसी छोटे लड़के को अवश्य पास रखना

चाहिये और सिवाय निकट सम्बन्धी के किसी अन्य को मिलने की आज्ञा न देना चाहिये क्योंकि वन, बागीचे, कूचे, तालावों पर कहीं भी एकान्त स्थान पर चाहे तीर्थ-स्थान क्यों न हो स्त्री पुरुष को एकान्त में वार्तालाप करने से दँड का भागी होता है और यही श्रीमान् हेमचंद्राचार्य सूरि अर्हन्नीति के पृष्ठ २१० में आज्ञा देते हैं:—

तीर्थे कूपे वने स्थाने, विजनेऽभिलपेन्नरः।
राज्ञा च सर्वथा दंड्यः परिणामाश्रयो विधिः ॥ ६

अर्थ–जो मनुष्य तीर्थ, कुआ, वन और अन्य एकांत स्थान में पर स्त्री के साथ संभाषण करे तो राजा को वह सब प्रकार से दंडनीय है क्योंकि नियम परिणाम के आश्रित ही विधि है ॥ ६ ॥

तिस पर भी हमारे भाई नहीं मानते और रात दिन व्यभिचार की उन्नति करेही जाते हैं। कहां तक समझावें बहुत से तो किसी न किसी बहाने से दूसरों के घर झांकने ही पहुंच जाते हैं। वहां स्त्रियों में हंसी ठट्ठा मखौल किया करते हैं। कितना दुष्ट कार्य्य है। ऐसी शिक्षा से

कब सम्भव है कि सन्तान सुशील होगी, अवश्य एक ना एक दिन ब्रह्मचर्य का मलिया मेट हो नरक की गोद में पड़ने की तैयारी होगी। इस वास्ते मित्रवरो ! पहिले से ही चेतो सन्तान को दुर्गति से बचाओ, दुष्टों के फन्दे में न आओ, ब्रह्मचर्य के नाश करने की रीतियों को जड़ से उखाड़ फिंकाओ, खोटी प्रथाओं की धज्जियां उड़ाओ, तभी सच्चे वीर पुत्र कहाओगे।

पीहर में शृङ्गार।

लीजिये यह ढांचा ही निराला है। विचार तो कीजिये क्या बाप (पिता) के घर शृङ्गार बनाना भी स्त्रियों को सुशील बनाता होगा ? शृङ्गार का स्वामी तो पति परदेश में और सुरमा पड़े बापके यहां, भला ये उचंगें कब तक रुकेंगी ? यदि नहीं रुकेंगी तो ऐसी खोटी कुचालों को बन्द करो और कन्यावर्ग की शिक्षाप्रणाली को सुधारो, उन्हें योग्य शिक्षा दो जिस से सारे अंधेर मिट कर ब्रह्मचर्य का प्रकाश हो।

वैधव्य अवस्था में शृङ्गार ।

बहुधा देखा जाता है कि पति के मरजाने पर स्त्रियां पति के सुहाग का शृङ्गार नहीं उतारतीं । कहीं उस समय चूड़ियां आदिक फोड़ ही डालती हैं पर बादमें पहन लेती हैं । न मालूम फिर वह किस के ऊपर पहनती हैं पर विचार किया जावे तो पति की उपस्थिति का पहनावा उस के मरणान्त होने के पश्चात ग्रहण करना स्त्रियों को कदापि उचित नहीं है किन्तु कहना पड़ेगा कि सुहागन स्त्रियों का पहनावा विधवाओं को पहनना उनको दुराचार सिखाने की शिक्षा है इसलिये भाइयो ! देश की बिगड़ी दशा सुधारो, वैधव्य अवस्था में भी मत दुराचार सिखावो, सभ्यता का प्रचार करो जिस से देशमें ब्रह्मचर्यव्रत का प्रकाश हो ।

स्त्रियों का परस्थान पर रात्रि को रहना

बहुधा देखा जाता है कि विवाह शादियों में चाहे कितना भी दूरी का सम्बन्ध क्यों न हो पर कोई लोग

प्रेम बढ़ जाने के कारण कोई मिष्टान्न उड़ाने के लालच में अपनी स्त्रियाँ और कन्याओं को विवाह वाले के मकान पर भेज देते हैं। बहुत से बड़े नगरों में अबेर होजाने के कारण अथवा कुतूहल देखने के वास्ते विवाह वाले के घर पर ही स्त्रियां और कन्याएं वहीं रात्रि को सो जाती हैं पर मित्रो! अब पहिले का सा समय नहीं है, बड़े भारी जोखम का सामना है। बहुत सी पतिव्रताओं को इसी के कारण शीलव्रत से हाथ धोना पड़ा है कोई राजी से और कोई बलात्कार तक होगये हैं और अन्त में चसका लग जाने पर परिवार तक कलंङ्की होगये हैं, इस वास्ते भाइयो! पहिले से ही सावधान हो कर अन्तिम परिणाम सोचकर काम करो और व्यभिचार फैलाने वाले कुमार्गों का शीघ्र निकन्दन करदो जिस से ब्रह्मचर्यव्रत का प्रकाश हो।

एकही मकान में स्त्री पुरुष का अकेले रहना।

अनेक दुराचारी पुरुष अकेले रहने की दशामें भोजन

बनाने के बहाने वा किसी के पालन पोषण की आड़ लेकर अकेली स्त्री को घर में रख लेते हैं इसी प्रकार दुराचारिणी स्त्रियां नौकरी वा अन्य किसी बहाने अकेले पुरुष को अपने पास रख छोड़ती हैं। वास्तवमें यह चाल महाभयानक है। यह कभी सम्भव नहीं कि वारूदके ढेर में अग्नि वास कर सके, अवश्य मेल पाकर सिलगेगी और अन्त में एक न एक दिन भांडा भी फूट ही जाता है पर शोक है उस समय हमारे भाई पँचायत की सख्ती काम में नहीं लाते जिस से पापियों का साहस और भी बढ़ जाता है और निर्भयता के साथ अनाचार सेवते हैं जिस से अन्य लोगों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है और वह भी अनुकरण करने को उद्यत हो जाते हैं। क्या ही अच्छा हो कि पंचायतों द्वारा ऐसे कुकर्मों की रोक करके व्यभिचार का द्वार बन्द किया जावे कि जिस से वीर्य रक्षा होकर अनेक लाभ हों।

वधू को नौकरों के गोदी।

बहुधा देखा जाता है कि नाई धीमर वा अन्य नौकर विवाह शादियों में वधू को गोदी में उठा कर पीनस में बैठाते हैं, वर के गृह पर ले जाते हैं, गोदी में ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर भी उठा कर ले जाते हैं, क्या यही पतिव्रत धर्म है ? उचित तो यह है कि पर पुरुष का संघट्टा [स्पर्श] भी न हो पर वहां पर पुरुषों से छाती से छाती मिलती है शर्म !

चाहे वधू बेचारी कुछ न जाने पर चाकर ने आनंद छाती लगा ले ही लिया। वाह री सभ्यता ? खूब नौकरों ने पहिले मुहूर्त किया शर्म।

इन्हीं प्रथाओं के कारण ब्रह्मचर्य के नोवाड़ों की सफाई हो जाती है शोक ! उचित है कि अब भी हमारे भाई सावधान हो इन कुरीतियों को त्यागें जिससे पतिव्रतधर्म की रक्षा होकर व्यभिचार की रोक हो।

बारीक वस्त्र पहनना

बस इस कुरीति ने व्यभिचार बढ़ाने में अति कर

दी है। बड़े २ घरानों में यह कुचाल प्रवेश करगई है। छोटे भी देखा देखी उन्हीं का अनुकरण कर रहे हैं। धोती साड़ी ओढ़ना दामन चोली इतने महीन पहने जाते हैं कि जिन अङ्गों को ढकने की आवश्यकता है दूर से ही चमकते हैं। यदि वर्षा के समय में कुछ भींग जावें तो और भी देवी का स्वरूप दीखता है, शोक, लज्जा हया की तो समाप्ति होगई। विवाह शादियों में और भी एक से एक बढ़िया महीन वस्त्र पहन कर निकलती हैं कि जिसमें मुंह छाती गुप्त अंग सभी साफ दीखते हैं तो कहिये मित्र ! पर्दा किस बात का रहा ? इससे तो नंगा ही भला जो कोई गौर से ही न देखें और दृष्टि भी पड़ जावे तो स्वयं मुंह फेर ले वाहरे सभ्यता ! जहां इतना महीन वस्त्र भला वहां व्यभिचार की कमी ही क्या, खूब अंग दिखाती फिरो जहाँ अपने अङ्ग दिखाने की लालसा है वहां पतिव्रतधर्म का क्या काम है क्योंकि यह लक्षण ही दुराचारिणियों के हैं। मेले तमाशे और जमना स्नान जाते समय यार लोग खूब छेड़ छाड़ करते हैं करें क्यों नहीं

पहरावा ही ऐसा है जो वेश्याओं को मात करता है। रण्डी भी उनके आगे चेली है, वह नाक भों दिखाती है कि शीलव्रत का नाम तक उनके पास नहीं फटकता लज्जा है, कि हमारे भाई सदाचार की सीमा को उलंघन करने वाली असभ्य कुचालों को रोकने में असमर्थ हैं क्या ही उत्तम हो कि ऐसी कामज्वर बढ़ाने वाली चालों को रोक कर सदाचार की रीतियों का प्रचार कराया जावे जिस से व्यभिचार का मार्ग छूट कर वीर्यरक्षा हो।

बजने आभूषण

काल ने अब रंग बदला है देश काल की गति ही निराली है अब बजने गहने स्त्रियों को पहनाना भी हानि कारक होचला है और प्रथा ने भी पलटा खाया है घर में चाहे पाँच भी आभूषण पहनने को न हों पर बाहर बाज़ारों में चक्कर लगाते समय मांग २ कर भी झनकार-दार पहन कर छुमछुम करती निकलती हैं चाहे परदेश और अधर्मियों का चहुं ओर घमसान हो पर उन्हें छुमक-छुमक कर चलना जो शब्द सुनकर जो ना भी ताकत

हो ताकने लगे यह शब्द ही ऐसा है कि किञ्चित् पायल की झनकार कानों में पड़ी फिर कहाँ ताव जो चित्त चलायमान न हो अच्छे २ योगी चलायमान हो जाते हैं तो हमारे भाइयों की गिनती ही क्या है झट शब्द कानों में पड़ते ही उधर ही दृष्टि अड़ाते हैं इस वास्ते मित्रो ! और ही बहुतेरे आभूषण हैं इन बजने आभूषणों की किंचित् कमी ही करदो और समय देखकर पहिनावो जो ब्रह्मचर्य्य की रक्षा हो कर व्यभिचार की रोक हो ।

छेड़ों की रात (जवांई को खिलाना) अर्थात् धावड़ धींगा

यह रीति भी भयानक दुराचार का चिन्ह है विवाह समय जब पति कामदेव की पूजनार्थ पत्नीगृह में जाता है तो बहुत सी स्त्रियां जंवाई को खिलाने के नाम से जमा होकर इतना उत्पात मचाती हैं कि सभ्यता सहस्र कोस दूर भाग जातीहै और आ निर्लज्जता तेरा ही

सहारा है, उस वाली कहावत चरितार्थ होती है कोई डोसी वनकर आती है तो कोई डोसा वनकर पुरुषों का भेष करके आ विराजते हैं जो सांस को रोक कर धुर-धुराकर गले से बोलते हैं कोई निर्लज्जता के ही प्रश्नोत्तर पूछती हैं जिसको आड़ी दोहे के नाम से पुकारते हैं उधर वर भी कमी नहीं रखते जो जी में आया ताल उड़ाते हैं, बाहरी सभ्यता, सच तो यह है कि उस समय व्यभिचार सिखाने का स्कूल होजाता है जो भोली भाली कुछ न भी जानती हो वहां से अवश्य कुछ न कुछ दुराचार सीख ही जाती है ऐ मित्रो! क्यों विषय वासनाओं में अन्धे हुवे कुचालों को नहीं रोकते सन्तान दिनों दिन हर प्रकार से दुराचारी बन रही है तुम को ध्यान भी नहीं, उचित है उस समय स्त्रियों के जमा होकर उत्पात मचाने की परिपाटी को रोको। जिससे देश में व्यभिचार बढ़ने के मार्ग रुक कर ब्रह्मचर्य का प्रकाश हो।

जवांई को श्वसुराल में छूट।

यह प्रथा भी गजब ढा रही है बहुत से नगरों में

जवांई को श्वसुराल के घरों में विचरने की पूरी स्वतंत्रता मिल रही है किसी बात का विचार नहीं वह लोग उसको पुत्र समान जान कर वेरोक टोक घर में भ्रमण करने देते हैं पर वास्तविक में सासू श्वसुर के वास्ते वह पुत्र समान है अन्य के लिये नहीं अन्य परिवार की कन्याओं और स्त्रियों के वास्ते तो वह विजार से भी भयंकर रूप धारण करलेता है स्त्रियें लज्जा के मारे अपना आदमी समझ वदनाम करना नहीं चाहतीं वह दुष्ट जवांई पुत्र समान घर में रहते ही नहीं और कुछ न कुछ छेड़ छाड़ कर ही बैठते हैं एक दो वार चमक विचक रही अन्त में वही गोलमाल होते देखा सच तो यह है कि उन जवांई लोगों को अपने घरों में क्या उन के घर में भी कारण पाकर अपनी वहू वेटियों को भेजना पड़े तो भी नियमानुसार भेजना चाहिये अन्यथा पीछे लोगों को हाथ मल पछताते ही देखा कहीं जवांई को घर बुला कर छत पर चढ़ उस के साथ होली खेली जाती है कहीं रात को उस के चारों ओर बैठी आड़ी दोहे पूछती रहती हैं जिनकी

समालोचना अन्यत्र कर चुके हैं कहां तक गिनाऊं अनेक चालें शील गंवाने की होतीहैं यहां मिलने बैठने की रोक नहीं करी जाती पर वो सभ्यता के साथ होना चाहिये पर इतनी स्वतन्त्रता दे आप पृथक् होजाना भी कदापि अच्छा नहीं है अतएव मित्रो सावधान होवो पहिले की लकीर पर फक़ीर मत होरहो, कुछ देश काल को भी देख कर काम करना सीखो जिस से इन कुरीतियों का सुधार होकर व्यभिचार की रोक हो ।

असभ्य अश्लील भाषा ।

वर्तमान में देखा जाता है कि अविद्या के प्रताप से सभ्यता के साथ बोलना भी लोग भूल बैठे हैं और साधारण वार्तालाप में गालियों का प्रयोग कर रहे हैं, यही नहीं परन्तु हंसी दिल्लगी में खूब भद्दे वाक्य कहते हैं स्त्रियों को भी वची, निपूती सोक रांड कहने का अभ्यास पड़ गया है । बहुत से लोगों ने अपने बच्चों को प्यार ही प्यार में गालियाँ सिखा चतुर बना दिया है । स्वयम्

मुहावरे में गालियां बोलते हैं। किसी ने तो खास २ गालियों को अपना तकया कलाम ही बना लिया है।

लज्जा का स्थान है कि आज नीच मनुष्यों की भाषा हमारे में प्रवेश करने लगी है। क्या कोई कह सकेगा कि ऐसी भाषा से सन्तान पर प्रभाव न पड़ेगा? नहीं नहीं अवश्य पड़ेगा। ब्रह्मचारी को तो एक शब्द भी विषय का विष समान काम देगा फिर भला जिन की भाषा में वैसे शब्दों की भरमार है उन का कहाँ ठिकाना? वो हमारे छोटे अनसमझ बच्चे उन शब्दों को सुन घर भर में रटना रटेंगे जिस से स्त्रियों पर और विशेष कर उस सन्तान के बड़े होने पर उसके चरित्र को धब्बा लगने का कारण होगा और बड़ों का सामना करना उसके बांयें हाथ का खेल होगा, क्योंकि-वो अभ्यास पड़ गया सो नहीं छूट सकता और ब्रह्मचर्य को जो धक्का पहुंचेगा वह तो जगत प्रसिद्ध है अस्तु मित्रो चरित्र को मत कलंकित करो, सभ्यता सीखो, असभ्य नीच भाषा बोलना

त्यागो जिस से ब्रह्मचर्य व्रत की नींव दृढ़ होकर सभ्यता का प्रचार हो।

नीचों से ठठोली।

बहुधा देखा जाता है कि हमारे भाई नीचों से भी हंसी ठट्ठा करने से नहीं चूकते। वास्तव में देखा जावे तो जैसों का सत्सङ्ग मनुष्य करता है वही लक्षण मनुष्य में आ जाते हैं। कमीनों से हंसी करने के साथ उन के व्यभिचारी कर्त्तव्यों को अपने में सम्मिलित कर लेते हैं। ठीक है संगत का प्रभाव आये विना नहीं रहता। प्रथम तो हंसी करना ही नहीं चाहिये, और की भी जावे तो बराबर की योग्यता वाले के साथ, सभ्यता के भीतर रह कर ऐसी अनोखी बात करनी चाहिये। जिस से मस्तिष्क जो काम करता हो उस से बच कर तबियत प्रफुल्लित हो, परन्तु अब तो ऐसा उल्टा सांचा है कि गाली गलौच पर उतर आते हैं जिस से बच्चे ही क्या सभी सुनने वाले व्यभिचार पर तुल जाते हैं और सभ्यों की दृष्टि से ऐसे हंसी दिल्लगी करने वाले तुच्छ हो जाते हैं, ऊंची

जगह तो बोलने योग्य भी नहीं रहते। रहें कहां से जिह्वा के लगाम नहीं किञ्चित् व्यभिचारी वचन बोले कान पकड़ निकाले गये। इस लिये मित्रो! अनेक दूषणों के साथ २ घृणित हंसी भी दूषित है जिस में नीचों के साथ हंसी तो और भी सदाचार का नाश करती है इस लिये मित्रो ऐसी हंसी कि जिस की नींव ही व्यभिचार पर हो अवश्य त्यागना चाहिये क्योंकि अपनी आत्मा की हानि के अतिरिक्त सन्तान उस घृणित हंसी को सुन कर दुराचारी बन जावेगी इस लिये मित्रो ब्रह्मचर्य की रक्षा के हेतु इन कुचालों को बन्द करदो जिस से व्यभिचार की शीघ्र रोक होकर ब्रह्मचर्य व्रत बलिष्ठ हो।

विवाह में बिरादरी का नाच।

वेश्या-नृत्य पर तो पूर्व लिख चुके हैं पर यहां उन स्त्रियों के विषय में लिखेंगे जो अपने परिवार के सन्मुख स्वयम् नृत्य करती हैं। कई नगरों में विवाह में बिनोला बिनोली आदि के समय जब बिरादरी के लोग इकट्ठे होजाते हैं तो सर के ऊपर एक घड़ा पानी का भर कर

उसी विरादरी की स्त्रियाँ नाचती हैं, कोई स्त्री दो घड़े पर लोटा रखकर नाचती हैं । प्रशंसा यह बताई जाती है कि वह चारों ओर हाथ मटकाती, कमर नचकाती नृत्य करे पर पानी की बूँद एक न गिरे । उस समय पुरुषवर्ग में से आवाज आती है फ़लाने वाली के क्या कहने हैं वड़ा ही अच्छा नाचती है । शोक ! जो जातियां सभ्य कहलाती थीं आज उन्हीं में रंडियों की सी हालत? उन लोगों को लज्जा आनी चाहिये; जहां ऐसे दुराचार बढ़ाने वाले रिवाज़ हों क्या व्यभिचार वढ़ाने में यह रीतियां सहायकारी नहीं ? क्या नाचते समय अङ्ग उपांग हवा से कपड़े उड़ने पर नहीं दीखते ? क्या उन स्त्री और पुरुषों के मन स्थिर रहते हैं ? कदापि नहीं । संतान तक विगड़ जाती हैं और व्यभिचार का मार्ग खुल जाता है इस वास्ते इन कुचालों को वन्द करके वीर्यरक्षा की ओर ध्यान दो जिससे देश का कल्याण हो ।

एक स्त्री पर दूसरी लाना

अनेक धनाढ्यों में यह भी कुटेव अधिक पकड़ रही

है कि एक विवाहिता स्त्री रहते हुए भी कोई योरूपियन लेडी (मेम) व्याह लाता है, कोई बाहर से लड़की मोल ले व्याह रचाता है, कोई परदेश जा दूसरी जातियों में व्याह कर आता है, कोई अपनी जाति में ही व्याह कराता है. अभिप्राय यह कि दो दो तीन २ चार २ इकट्ठी कर लेते हैं जिससे उन लोगों का मान प्रतिष्ठा धन दौलत बल वीर्य नष्ट होने के अतिरिक्त शक्ति न रहने पर स्त्रियां दुराचार सीखती हैं, क्योंकि जिस उद्देश्य से उन्होंने एक साथ इतने विवाह रचाये हैं भला वह स्त्रियाँ उस को क्यों भूलने लगीं हैं। नित्य नित्य नवीन विवाहिता लाने पर पुरानियों से पराङ्मुख होना संभव है और उस दशा में वे क्या कर्त्तव्य कमावेंगी उस का विचार पाठक स्वयं करें। इसके अतिरिक्त साधारण लोगों पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। उन बड़े आदमियों की ओट में और भी अनेक मनुष्य दुराचारी बनते हैं इससे उत्तम है कि जाति की ओर से इसका प्रबन्ध करके सदाचार का प्रचार किया जावे जिससे देश में व्यभिचार का मार्ग बंद होकर चतुर्थ व्रत की रक्षा होसके।

स्त्रियों का ख़ाली बैठना

बहुत से अमीर घरों में स्त्रियां निठल्ली बेकार बैठी रहती हैं। घर के धंधों तक का उन्हें ज्ञान नहीं रसोई भी ब्राह्मणी (बाई जी) आवें तभी बनें। वे लोग इसी में अपनी कीर्ति समझते हैं पर याद रहे इससे अनेक दूषण हो जाते हैं। भोजन पचता नहीं काहिली बढ़ती है, देश में द्रव्य नहीं बढ़ता, कि फ़िजूल खर्ची बढ़ती है इसके अतिरिक्त भोजन रुचिकर नहीं बनता। विपत्काल में वह टेव दुखदायी होती है। अनेक बार शत्रुओं ने रसोईयों से मिलकर ज़हर (विष) दिलवा दिये हैं। एक विद्वान् ने तो स्त्री के भोजन बनाने से माता का बनाना प्रधान माना है क्योंकि स्त्री की ओर से किंचित् शङ्का होवे तो हो सकती है पर माता पुत्र को कभी विष नहीं देगी और जैसा माता चाव प्यार से जिमावेगी कदापि दूसरा नहीं जिमा सकता है। इन अनेक बातों के अतिरिक्त सब से बड़ी बात यह है कि खाली बैठे उन्माद ही सूझेंगे। जहां घर का काम नहीं धर्म ध्यान नहीं युवा अवस्था हुई

वहां सदाचार का क्या काम ? अवश्य ही मन में कुवासना उत्पन्न होगी और व्यभिचार की उन्नति होगी इस वास्ते बुद्धिमानों को चाहिए वह युवा स्त्रियों को ठाली न बैठने दें और रसोई आदि घर के धंधों में धर्म ध्यान के अतिरिक्त सर्वकाल लगाये रहें, जिससे अनेक लाभ होते हुवे सहज ही में ब्रह्मचर्य की रक्षा हो सके ।

थ्येटर और वाइसकोप ।

इसका भी प्रचार आज कल बहुत होगया है बड़े २ नगरों में तो नित्य थियेटर बाइस्कोप देखने का चाव समा गया है इसके द्वारा भी यदि धर्म प्रचार किया जावे तो बड़ी सुगमता से धार्मिक भाव बताकर देश का उपकार किया जा सकता है । क्योंकि जो बात समझ में देरी से आती है वह इसके द्वारा शीघ्र समझ में आजाती है । और इसका प्रभाव भी अच्छा होता है परन्तु इन बातों का प्रचार इस देश में बहुत कम है यहां तो कामाग्नि प्रज्वलित करने के दृश्य दिखाये जाते हैं । आसक्त और

प्रेमी के बिना तो टुकड़ा ही नहीं टूटता । झूठे किस्से कहानियां गढ़२कर उनका दृश्य दिखाया जाता है जिनमें असभ्यता अश्लीलता, दगाबाज़ी, झूठ, विरहवासना भरी रहती है। क्या संभवहै ऐसे दृश्य देखकर सदाचारका प्रचार हो ? कदापि नहीं बहुत से लोग तो प्यार में अपनी स्त्रियों और बच्चों तकको अपने साथ ले जाते हैं जिन नव-यौवनाओं तथा बालकों ने स्वप्न में भी दुराचार का दृश्य नहीं देखा था वह उस समय प्रत्यक्ष विधि विधान सहित देख व्यभिचारी बनते हैं, शोक है निज स्त्री बच्चों को व्यभिचारी बना देश में व्यभिचार बढ़ाया जा रहा है-लज्जा ! उचित है कि कामाग्नि बढ़ाने वाले दृश्यों को न स्वयम् देखो, न सन्तति को दिखावो जिन मार्गों से व्य-भिचार बढ़ रहा है शीघ्र उन रास्तों को बंद करो जिस से देश में वीर्यरक्षा होकर सुख प्राप्त हो ।

स्त्री पुरुषों का [मज़ाक] अर्थात् पर पुरुषों से हंसना।

यह रीति महा भयंकर व्यभिचार बढ़ाने वाली है। दुराचार की नींव यहीं से लगती है। हंसी ठट्ठा होते २ और ही गुल खिल जाता है जिसको हमारे भोले भाले भाई स्वप्न में भी नहीं जानते और विवाह शादियों में तथा होली आदि पर्वों में स्त्री पुरुषों को हँसी ठट्ठा करने से नहीं रोकते जिसके कारण स्त्रियाँ दुराचारिणी और पुरुष दुराचारी होजावे हैं और उनका असभ्यता का बर्ताव देख छोटे बालक भी उसी पथ को ग्रहण कर लेते हैं। शोक है कि हमारे भाई जानते हुए भी इन कुचालों को बन्द नहीं करते, शोक! बहुत सी लजवन्ती कि जिनको स्वप्न में भी दुराचार का ध्यान नहीं पर इन अवसरों पर दूसरों की देखा देखी उनकी भी सफाई होजाती है क्यों न हो खुली हँसी ठठोली बिना रंग लाये रहता ही नहीं, जिस में स्त्री को तो अवश्य खो ही देता है कहा भी है:—

आलस्य नींद किसान को खोवे, चोर को खोवे खांसी।
टका ब्याज मूल को खोवे, रांड को खोवे हांसी॥

इस कहावत के अनुसार बहुत सी स्त्रियों को हंसी ठट्ठे ने सदाचार से खोदिया अर्थात् व्यभिचारी बना दिया अब तो सावधान हो और इन कुरीतियों को बन्द करके सदाचार की रक्षा करो जिस से ब्रह्मचर्य व्रत का प्रकाश हो।

नोट—टका दो पैसे को कहते हैं प्रति रुपया प्रति मास दो पैसे ब्याज लेना टका ब्याज कहाता है।

पुत्र पुत्रियों का साथ खेलना।

यह रीति भी इतनी विषैली है कि कदाचित् ही दूसरी दृष्टि पड़े। व्यभिचार सीखने की पहली ही पाठसाला यह है। घर के लोग बालक समझ ध्यान नहीं देते वह बड़ों को भी मात कर जाते हैं। घर में जो देखते हैं सुनते हैं सभी का नाटक रचाते हैं वर बधू के नेग देखते हैं उसी के अनुसार नकली विवाह खेल में ही रचाते हैं। जिन बातों की उनसे आशा नहीं वो खेल में ही करते हैं।

बताइये उनसे क्या बात शेष बच सकती है और क्यों कर वह संतानें ब्रह्मचारी बन सकेंगी। उत्तम है भाइयो इन कुचालों को रोको, अपने आचरणों को सुधारो, पुत्र पुत्रियों को साथ मत खेलने दो साथ खेलने से पुरुषों की सी स्वतन्त्रता पुत्रियों में बढ़ेगी निर्लज्जता और असभ्यता सीखेंगी बहुधा ग्रामों में देखा जाता है किसी का लड़का किसी की लड़की प्रातःकाल के निकले सायंकाल को घर आते हैं बाहर जंगलों में ही खेला करते हैं शहरों में गलयारे और सूने खण्डरों में खेला करते हैं जिसके कारण अनेक दुराचार सीखते हैं अतएव मित्रो इन बातों को साधारण न समझ कर शीघ्र बन्द करो जिस से ब्रह्मचर्य की रक्षा होकर व्यभिचार का द्वार बन्द हो।

पुत्र पुत्रियों का साथ पढ़ना वा पढ़ने जाना और

(कन्या पाठशाला में पुरुषों का पढ़ाना)

बहुधा देखा जाता है द्रव्य के लोभ में पड़ कर पुत्री

पाठशाला अलग न खोल कर पुत्रों के साथ ही कन्याओं को पढ़ाया जाता है पर वास्तव में देखा जावे तो यह प्रथा इस समय में इतनी विषयुक्त है कि तत्काल प्रभाव कर जाती है और भविष्य में वह भयङ्कर परिणाम लाता है जिसको कहते हुए कलेजा कांपता है प्रथम तो यही अनर्थ होता है कि एक शाला में पढ़ने से या साथ पाठ-शाला जाने से आपस में प्रेम बढ़ जाता है और जब प्रेम होजाता है, तो आप हमें बता दीजिये कि बचाव ही क्या रहता है और क्या २ अनर्थ नहीं होते बड़े होने पर भी अनेक उदाहरण ऐसे मिलते हैं जो पूर्व पाठशाला प्रीति के सम्बन्ध से दुराचार भोगते हैं द्वितीय पुत्र विशेष हों तो उनकी पुरुषों की सी बोली कन्याओं में और कन्या विशेष हों तो उनकी स्त्रियों की सी बोली पुत्रों में प्रवेश कर जाती है तृतीय अध्यापक जी का खांडा मुफ्त में ही निकलता है जिस का किसी को ध्यान भी नहीं उचित तो यह है कि पुत्री पाठशाला में भी किसी योग्य अध्या-पिका से पढ़ाना चाहिये पुरुष से नहीं क्योंकि अनेक स्थान

में इन कारणों से गोलमाल हुए हैं इस वास्ते भाइयो इन कुरीतियों से सन्तति को बचाइये और कन्याओं को कन्या पाठशाला में पृथक् और पुत्रों को पृथक् पाठशाला में पढ़ाइये और ध्यान रखिये पाठशाला जाते समय पुत्र पुत्रियां साथ न जावें अन्यथा वो ही उपरोक्त बताये दोषों की सन्तान शिकार बन जावेगी, इसलिये मित्रो ऐसी प्रथाओं को शीघ्र बन्द करो जिससे ब्रह्मचर्य की रक्षा होकर व्यभिचार की रोक हो।

विवाह में व्यभिचारी गदर

बस भाइयो इस समय व्यभिचार का खूब ही गदर रहता है आते जाते किसी को रोक टोक ही नहीं चाहे किसी पर कोई हाथ फेंक दे उस रोले में पूछता ही कौन है खूब ही मन के फफोले फोड़े जाते हैं लज्जवंती लाज में मरती है व्यभिचारियों के नोरोजे होते हैं यदि किसी कारण से कोई रह गई मकान पर तो फिर क्या है चाहे कन्या ही क्यों न हो दुराचारी लोग दुष्ट कर्मों से नहीं चूकते शोक है कि ऐसे दुष्टों के घर पर स्त्रियों का

जाना बन्द नहीं किया जाता अनेक स्त्रियां ही उत्पात की जड़ होती हैं सीटने आदि नाना प्रकार से छेड़ करतीं हैं जिनके बारे में इसी पुस्तक में लिखा गया है वहां से देखिये अनेक बरातों में सुशील लड़के दुराचारी हो जाते हैं स्त्रीवत पुरुषों से व्यभिचार की विधि नहीं मालूम किस दुष्टात्मा ने चलादी है बरातों में इसी विधि को ले कर अनेक अत्याचार होते हैं बहुधा लोग स्वयम् तो बरात में जाते नहीं बच्चों को भेज देते हैं बेटे वाला व्याह के काम धन्धे करे, या उनकी रक्षा करे जिसमें भी प्रायः कई स्थानों में बरात ही बहुत भारी लेजाने की प्रथा है वहां किन २ के बच्चों की रक्षा करें बस फिर क्या है कुकर्मियों की चढ़ बनती है और इतने अनाचार होते हैं कि लेखनी लिख नहीं सकती देश इन्हीं कुचालों के कारण रसातल को जा रहा है और सन्तानें विशेष कुकर्मी होकर नाना प्रकार के रोगों का घर बनती जाती हैं जिसके कारण इस देश की बलिष्ठता सुन्दरता विद्वत्ता अनेक गुणों का घात होरहा है अतएव मित्रो विवाह

समय जो सदर में गदर, व्यभिचार का होता है उसे रोक कर सन्तति को कुमार्ग से बचाओ जिस से व्यभिचार का द्वार बन्द होकर देश का कल्याण हो।

अश्लील चित्र

यह रंगत ही निराली है सरकारी तौर पर भी एक प्रकार से इन असभ्य अश्लील चित्रों की मनाई है तो भी हमारे भाई नहीं मानते गुप चुप न मालूम कहाँ से लाकर मकानों में लगा ही लेते हैं जिसका प्रभाव इतना बुरा पड़ता हैं कि लेखनी से बाहर है जो स्त्रियां देखतीं हैं वही दुराचारिणी बन जाती हैं पुत्र पुत्रियां पर तो क्लोरोफ़ार्म का सा प्रभाव पड़जाता है देखते ही के साथ हरएक के मन में विषय वासना बस जाती है गर्भाधान समय उन चित्रों को देखने से वो ही प्रभाव होता हैं जिसके कारण सन्तान व्यभिचारी पैदा होती है एक नहीं अनेक दूषण हैं इसी प्रकार कोकशास्त्र के नाम से ८४ अश्लील असभ्य चित्रों (आसनों) की पुस्तक बहुत से कामी पुरुष मोल लाते हैं पर वह इतनी हानिकारक होती

है कि जो उसको देखता है उसी को काम विकार जाग्रत होता है इस वास्ते मित्रो ! ऐसे बेहूदे असभ्य अश्लील कामाग्नि प्रज्वलित करने वाले चित्रों (आसनों) को मोल लेकर अपने को और अपनी सन्तानों को व्यभिचारी मत बनाओ स्वयम् डूबते हुए दूसरों को मत डुबाओ बहुत कुछ नष्ट करचुके अब तो जाग्रतदशा में आवो अपने लड़के और लड़कियों को वेश्या की भाँति व्यभिचारी मत बनाओ, ऐ मित्रो ! इन कुचालों को रोककर सन्तान को ब्रह्मचारी बनाओ सदाचार को सिखाओ जिससे व्यभिचार बढ़ता हुआ रुककर ब्रह्मचर्य का प्रकाश हो ।

स्वांग रास रामलीला.

इस समय इस कुचाल ने देश में व्यभिचार बढ़ादिया पुरुषों को स्त्री का रूप बनाकर दुराचारी करादिया, हीरा राँझा, लैला, मजनूं, मद्दरू, गिजाला, इन्द्रसभा, का दृश्य दिखा लोगों में काम विकार फैला दिया. राम, सीता, कृष्ण गोपिकाओं का स्वरूप बनाकर लड़कों को खराब किया इतने ही पर समाप्ति नहीं हुई अपरञ्च स्वाँग बनने

वाले लड़कों से स्त्रीवत व्यभिचार का काम जारी किया शोक ऐसे दुराचारियों ने देश में अंधकार फैलादिया, शर्म, राज्य से १४ वर्ष का दण्ड निश्चित होने पर भी पापियों ने कमाल किया पुरुषाओं का स्वांग बनाकर बूढ़े बड़ों का नाम बदनाम किया नक़ाल नक़ल करें तो लड़ने को दौड़ें और खुद नक़ल उतारें उसकी खबर ही नहीं और तुर्रा यह कि उन्हीं से दुराचार सेवन करें, शर्म।

आपने देखा होगा कि जो लड़के रासों में कृष्ण और गोपिका बनते हैं कहिये किस प्रकार सैन चलाकर आंखें मटकाते हैं क्या उन्हें देख स्त्री समाज जो रास देखने जाती हैं चुप रहेंगी – याद रक्खो वो उनसे दूनी सैन चला आंखें मटकावेंगी शोक! रही सही भी मर्यादा धूल में मिलगई जो स्त्रियां रात्रि को वहां जाती हैं रास्तों में ही नथली उतर जाती हैं आभूषण जाते रहते हैं धक्कम धक्का इतनी सहनी पड़ती है जिसका स्वाद चखने वाली ही जानती हैं, शर्म, खूब अक्किल गंवाई, सन्तान भी उन्हें देख खूब चतुर बनजावे और दुराचार में पहला नम्बर

पीवे, वाहरे व्यभिचारी शिक्षा, खूब देश को डुबोया लज्जा का स्थान है कि हमारे भाई इन कुचालों को नहीं रोकते जिसके वहाने हजारों व्यभिचारी बनते चले जाते हैं उचित है कि इन कुमार्गों को बन्द करो जिससे देश की दशा सुधर कर ब्रह्मचर्य का प्रकाश हो।

नशा अर्थात् मादक द्रव्य सेवन

यह ऐसी बुरी वस्तु है कि अच्छे बुद्धिमान् मनुष्यों को उल्लू बना देती है कहावत भी है-

चुल्लू में उल्लू लोटे में गड़गाप

सो ठीक है इसी के सेवन के चक्कर में पड़कर अनेक प्राणी व्यभिचारी होगये हैं और होते जाते हैं जैसे मदिरा (शराब) भाँग, चरस, गांजा, मदक, अफ़ीम चाहे कोई सा नशा क्यों न हो सबही एक से एक बढ़कर दुराचार की निशानी है यदि शास्त्रों में देखा जावे तो सभी धर्मों में इसका निषेध है पर मानता कोई नहीं यहां तक कि अपने साथियों को सिखाने के यत्न करके अनेक दुरा-

चार सेवते हैं आपने शराबियों को देखा ही होगा कि वह नशे की दशा में क्या २ अनाचार करते हैं माता बहन तक से दुराचार सेवने को तैयार होते हैं स्त्री को माता और माता को स्त्री कहकर पुकारते हैं बहुतों ने बलात्कार (ज़िनाबुल जब्र) के केस होते हैं। तो भी हमारे भाई प्रतिवर्ष इस कुमार्ग की उन्नति किये ही जाते हैं अनेक तो काम कुचेष्टा के आनन्द मनाने को ही नशेबाजी सीखते हैं। एक नशेबाज़ गधे की तरह नाली में नशे के कारण लोटता हुआ कुत्तों से मुख में मुतवा रहा है, तो दूसरा उससे भी बढ़िया शराब मांगता है नशे की हालत में परस्त्रियों को देखकर झूमते हैं कुकर्म करने को उद्यत होते हैं जब पुलिस जूते पटकती है तब धोती में मूत निकलता खिचडते जाते हैं पर व्यभिचार के मार्ग से पीछे पग नहीं हटाते शोक है कि हमारे भाई जानते बूझते इस जाल में क्यों फँसते हैं और मर्यादा गंवा दुराचारी बनते हैं जहां तक देखा गया है इसी रास्ते से व्यभिचार (ज़िनाकारी) हमारे देश में

बहुत उन्नति कर चला है देश की दशा भयंकर होचली है नगर २ और ग्राम २ में नशेबाजी सीख कर लोग व्यभिचारी बनते जाते हैं उचित है इन कुरीतियों को जड़ मूल से उखाड कर ब्रह्मचर्य का प्रचार करो जिससे देश में व्यभिचार रुक कर तुम्हारा कल्याण हो।

कृष्ण और महादेव पूजा।

यद्यपि इस सोशियल पुस्तक में मेरा किसी धर्म पर आक्षेप करने का भाव नहीं है परन्तु प्रसंगोपात्त जो विषय आता है उस पर सोशियल रीति से सम्मति लिखना कोई दोष भी नहीं है। यह पूजा क्यों चली, कब चली, इन का इतिहास किन लोगोंने क्यों बिगाड़ा ? इसके विचार को यह निबन्ध नहीं है. यहां केवल व्यभिचार बढ़ाने वाले कुमार्गों की मीमांसा है. इस लिये कहना पड़ेगा कि और कुरीतियों के साथ यह भी मार्ग व्यभिचारियों के पौबारे कर रहा है। कृष्ण जी की गोपिकाओं के साथ अनेक लीलाओं के चित्र जैसे कि गोपिकाओं के कपड़े चुरा उन्हें नग्न करना और यमुना किनारे अथवा गोपिकाओं के घर

किलोल वा नहाते समय के चित्र ब्रह्मचर्यसे भ्रष्ट करने में चित्त को डावांडोल कर ही देते हैं। "देखत जैसी सीखत" के अनुसार चित्त से विकार उत्पन्न हो ही जाता है और व्यभिचारियों को यह कहने का अवसर मिलता है कि यह बात अवतारों से चली आती है बुरा होता तो वही क्यों करते अतएव हमें क्यों रोका जाता है ? हम भी करेंगे। बहुत से दुराचारियों ने तो उन लीलाओं को देख बहुत से ख्याल होली क़व्वाली ऐसी २ बना रक्खी हैं कि सुनते ही विरह टपकने लगता है। यथाः —

जोबन का मांगे दान कान कुञ्जन में

अब आप ही समझलें कि जोबन का दान कैसा कान अर्थात् कृष्ण जी मांगते हैं ! क्या कोई ऐसी बातों से सभ्यता सीख सकता है ? महादेव पूजा ने इससे भी अति करदी,प्रत्यक्ष लिंग ही बना कर पुजवादिया। भला कहीं इस सभ्यता का भी ठिकाना ! जिनके इतिहासों तक में इतनी कामाग्नि भरी कथायें लिखदीं कि पढ़ने सुनने वाले और उनके पूजने वाले यों ही दुराचार के

गढ़े में फिसल जाते हैं। मित्रो ! सावधान हो और व्यभि-चार सिखाने वाली वा कामविकार जाग्रत करने हारी मूर्तियों से किनारा करो जिससे व्यभिचार रुककर ब्रह्म-चर्य्य की रक्षा हो।

माता, शीतला, गनगोर गौरा पार्वती।

इन मेले ठेओं में भी स्त्रियों की खूब ही मट्टी पलीत होती है। दुराचारी मनुष्यों के भी पौबारे हैं। दुराचारिणी स्त्रियों को भी चस्का पड़ा ही रहता है जाये बिना मानती ही नहीं, उनके घर वाले पुरुष वर्ग अन्धे होरहे हैं, कोई ध्यान देता ही नहीं क्या अच्छा हो कि दुराचार बढ़ाने वाले मेलों में स्त्रियों को न भेजा जावे। हजारों मनुष्य दूसरे की लज्जा लेने को उन मेलों में जाते हैं और नाना प्रकार से शील की सफ़ाई होती है। हा शोक ! धर्मके बहाने व्यभि चार बढ़ता है। आगेवान और बुद्धिमान् पुरुषों को उचित है कि ऐसी प्रणाली सुधारकर व्यभिचार की रोक करें।

दुर्भिक्ष और कंगाली।

यह दोनों विपत्तियां जिस समय निराश्रित स्त्रियोंपर

पड़ती है तो बहुतों का चित्त डावांडोल होकर धर्मसे भ्रष्ट होजाता है उस समय व्यभिचार आदि नाना प्रकार के कर्त्तव्यों से पेट पालना सूझता है। दुर्भिक्ष के समय बहुत प्राणी अपने धर्म को छोड़ अन्यधर्म स्वीकार करते हैं जिसमें दुराचार ही प्रधान होता है। बहुत से लोग पुत्रियों को वेंच डालते हैं। बहुत सी पुत्रियों को उनके कुटुम्बी भूख का त्रास न देख सकने के कारण उन्हें छोड़ चल देते हैं उन लड़कियों को ठगी मनुष्य भोजन के लालच से ले जाकर बलात्कार तक करते हैं, अनेक अन्य धर्मी अपने घरमें डाल लेते हैं, अनेक वेश्या बन जाती हैं छप्पनयाकाल में तो इसकी अनेक कविताएं दिल दहलाने वाली गली गली में गाई जाती थीं पर ध्यान कौन करता है प्रतिवर्ष इन दोनों कारणों से भी देश में व्यभि-चार बढ़ रहा है, धर्म घट रहा है। कहां तक गिनाऊं उन्हें अनेक विपत्तियों का सामना है। धनी लोगों को उचित है—अनाथाश्रम, विधवाश्रम आदि संस्थाएं खोल कर सुशीलों की रक्षा करें। अनावश्यक व्यय में धनको बरबाद

करना छोड़ वह द्रव्य सुमार्ग में लगाकर देश में सदाचार फैलावें। बहुत से भाई व्यर्थ व्यय में ही अपना नाम समझते हैं पर वह नाम नहीं बदनाम है। तुम धन को व्यर्थ खोवो, तुम्हारे भाई उस के अभाव से दुराचारी बनें क्या यह लज्जा का स्थान नहीं है? धनाढ्यों को उचित है कि उस धन उन से अनाथों की सहायता करके ब्रह्मचर्य्य की नींव को दृढ़ करें जिससे देश में व्यभिचार रुककर शीलव्रत का चहूं ओर प्रकाश हो।

यतियों के पास अकेली स्त्री का जाना ॥

अकेले में वार्तालाप करनेकी पोल पहिले खोल चुकाहूँ पर यह विषय स्वतंत्र होनेसे इसपर भी कुछ कहना पड़ताहै। पहले समयमें "यथानाम तथागुण" के अनुसार ही यतियों का जो आचरण था वह अब नहीं रहा। इस समय में बहुत से यति धर्म कर्म से विमुख परिग्रहधारी संयम से भ्रष्ट हुए थके वैद्यक ज्योतिष टामण टूमण आदि रोज़गार ले बैठे हैं और पैसा कमाने से ध्यान है जिन में अधिकांश दुराचारी होगये हैं। बीकानेर आदि नगरों में

तो यति यतने इतना अनर्थ सेवन करती हैं कि लेखनी से लिखा नहीं जाता। संघपट्टा जिन चैत्यवासियों के वास्ते बना था वही चैत्यवासियों के लक्षण पाये जाते हैं इन के द्वारा भी देशमें व्यभिचार फैल रहा है। अनेक स्त्री गुरुभाव की ओट ले आखर (अक्षर) लेने के बहाने अकेली इन के पास जाती हैं और वहां से मोटा ही आखर लाती हैं जिसका किसीको पता भी नहीं लगता इसलिये भाइयो ! हर प्रकार से सावधान रहने की आवश्यकता है बहुत से घरों की मर्यादा इसी मार्ग द्वारा कलंकित हुई है। शोक है कि हमारे शास्त्र की आज्ञा न होने पर भी ऐसी प्रथाओं पर ध्यान नहीं देते जिसके द्वारा देशमें व्यभिचार बढ़ रहा है उत्तम हो इन कुचालों को दूर करके शीलव्रत का प्रचार करो जिससे व्यभिचार का जड़ मूल से निकंदन होकर सदाचार का प्रचार हो।

व्यभिचारी पुस्तकें

इस समय भारतवर्ष में जिनाकारी (व्यभिचारी) पुस्तकों का इतना चाव बढ़ गया है कि बहुत

से घर इसी में बरबाद होगये और बहुत सी स्त्रियाँ दुराचारिणी और पुरुष दुराचारी बनगये हैं जहां थोड़ासा लिखनापढ़ना सीखे झट हीरा रांझा, लैला मजनू शीरीं फ़रहाद माहरू गिज़ाला इन्द्रसभा आदिक ख्याल बारहमासे की किताबें पढ़ने लगे फिर भला सभ्यता का कहां पता ! जैसी शिक्षा मिलेगी वैसा ही प्रभाव होगा व्यभिचारियों का इतिहास पढ़ा व्यभिचारी बनगये। किसी धर्मात्मा का पढ़ने धर्मज्ञ बनते। वास्तव में मनुष्यों के सुधार का सत्संग ही प्रधान कारण है जिस में भी गुणी मनुष्यों की संगति एक बार है तो एक बार नहीं भी है पर पुस्तक हर समय पढ़ सकता हैं और उसका विश्वास भी हो जाता है इसी लिये इस पर बड़ा विचार करने की आवश्यकता है। विचारने का स्थान है कि इश्क़ [विरह] की असभ्य अश्लील किताबें पढ़ी जावें और लच्छेदार ख्याल गीत व्यभिचार भरे गाये जायें तो कब आशा की जा सकती है कि उसका विष न चढ़े ? अवश्य चढ़े पर चढ़े। उत्तम हो कि पहल से ही इसका सुधार किया जावे

और ऐसी व्यभिचार भरी पुस्तकों को घर में ही न आने दिया जावे और जो होवें उन को भी निकाल बाहर किया जावे कि जिससे ब्रह्मचर्यव्रत निर्विघ्नता से पलसके।

इसी बात पर ध्यान न रखने से आज कल स्त्रियों के पढ़ाने के बारे में यह प्रश्न उठने लगा है कि बहुधा स्त्री पढ़ कर दुराचारिणी होजाती हैं इस वास्ते स्त्रियों को नहीं पढ़ाना चाहिये पर मित्रो ! सोचना चाहिये कि क्या बिना पढ़ी स्त्रियां सभी सदाचारिणी हैं ? नहीं, उनमें भी अनेक दुराचारिणी दीखती हैं तो भला विद्या का क्या दोष ? क्या पुरुष पढ़ कर सब दुराचारी हो जाते हैं ? कदापि नहीं। क्या अनपढ़ पुरुष सभी सदाचारी होते हैं ? कदापि नहीं। तो कहिये पढ़ने और न पढ़ने से इस दुराचार का सम्बन्ध ही क्या? यदि पढ़ने का दोष होता तो सभी पढ़े लिखे स्त्री पुरुष एक से होते पर ऐसा है नहीं। वास्तव में यह दोष विद्या का नहीं परञ्च आप की असावधानी का है। क्यों ऐसी भद्दी विषयान्ध काम विकार जाग्रत करने वाली

पुस्तकें पढ़ने देते हो जिस की नीव ही व्यभिचार पर हो उसकी पहले रोक करो दोष आप का और मढ़ते हो विद्या के सिर, क्या खूब न्याय है। उचित है मित्रो! इस विषय पर पूरी दृष्टि रख कर धर्म की पुस्तकें पढ़िये पढ़ाइये और असभ्य अश्लील विरह [वासना] से भरी गन्दी पुस्तकों की रोक कीजिये फिर देखिये सन्तान धर्मनिष्ठ होती है या नहीं। हमारे देश में इन्हीं गन्दी पुस्तकों के कारण नन्हें बच्चे और अनेक स्त्रियां दुराचारिणी बन गई और बन रही हैं अस्तु सब से पहले इधर ध्यान दो और इन कुटेवों को जड़ मूल से काट फैंको जिस से देशमें सन्तति सुधर कर व्यभिचार की रोक हो।

गौना तीन वा पांच वर्ष में करना ॥

यह प्रथा भी निराले ढङ्ग की है। विवाह होने के पश्चात् द्वितीयबार वधू को वर के यहां भेजने में वर्षों घुमाने की अत्यन्त खोटी प्रथा चल पड़ी है। कहीं तीन वर्ष, कहीं पाँच वर्ष, कहीं सात वर्ष में वधू को वर के यहां भेजते हैं। इस प्रथा को कहीं गौना, कहीं चाला, कहीं

मुकलावा, कहीं वेहूंदा इत्यादि अनेक नामों से पुकारते हैं, पर कार्य क्या होता है, मानो निरा व्यभिचार सिखाया जाता है, यदि कहो क्यों, तो सुन लीजिये यों —

प्रथम तो यह प्रथा ही उन लोगों में विशेष है जिन में पुनर्विवाह वा विधवाविवाह नहीं होता। तो कहिये महाशय यदि होते ही विवाह साल दो साल के भीतर पति स्वर्ग सिधारे तो वह अबला किस किस को रोवे। बहुत सी इसी कारण को पाकर दुराचार के चक्कर में पड़ जाती हैं। द्वितीय माता पिता यह समझ कर कि बेटी छोटी है तो क्या है सुसराल तो गौना होने के बाद ही जावेगी, लाओ हम अपने जीवन में अपने मन की तो निकाललें अपने जीते जी यह विवाह तो देख लें बड़े होने पर तो जोड़ा भी मिलना कठिन होगा। बस, ऐसे मनघड़न्तों वाले जहां दोनों ओर से मिले झट से बच्चों के भाग्यका निपटारा हुआ। (*) अब विचार तो कीजिये युवा

---

* इस विषय पर मासूम बच्चों की शादी में पूर्व लिखा गया है, वहां से देखिये।

होने के पूर्व ही यदि जोड़ी खंडित होगई तो क्या होगा, लड़की चल बसी तो विवाह का रुपया अकारथ गया। दुबारा विवाह को धन नहीं रहा तो वह घर ही नष्ट हुआ। यदि लड़का स्वर्ग सिधारा तो विधवाओं की संख्या बढ़ी जिसमें अनेक दुराचारिणी होकर कुल-कलंकित करेंगी।

तृतीय यदि कन्या युवा है तो लज्जा के मारे चाहे कुछ न कहे पर दुराचा में अनेक प्रवर्तनी हैं और ऐसा मन में विचारती हैं जैसा कभी ग्रामोफोन में रिकार्ड सुना होगा—

राग ॥

गौना करदे बाप, महापापी गौना करदे ॥ टेक ॥
मेरे संग की दो दो खिलावें, मेरी रीती गोद फटे छाती ॥
गौना करदे० ॥
गौना करदे बाबुल महापापी गौना करदे ॥

इसी से आप अनुमान लगालें कि कामदेव प्रज्वलित होने पर कितना प्रलयकाण्ड मचता है और इसी कुरीति के कारण अनेक दुराचार सीखते हैं। उचित है, मित्रो! इन कुचालों को रोकिये। विवाह से ३, ५, ७ वर्ष ही

में गौना किया जावे यह प्रथा उठाइये, वर वधू का युवा-अवस्था में ही विवाह कीजिये और गौने रोने के फेर में न डालिये जिससे देश में बढ़ता हुआ व्यभिचार बन्द होकर चौथे व्रत (ब्रह्मचर्य) की रक्षा होने में पूरी सहायता मिले।

स्त्रियों का परपुरुषों से तेल मलाना, स्नान कराना, पैर दबाना।

बहुधा देखा जाता है कि कलकत्ता आदि नगरों में युवा स्त्रियां परपुरुषों से अर्थात् कहार, धीमर, महरा आदि अपने २ नौकरों से पैर दबवाती, हैं शरीर पर तेल मलवाती हैं, स्नान करते समय मैल उतरवाती हैं। भला ऐसी अवस्था में यह कभी सम्भव है कि उन युवतियों के शीलव्रत (ब्रह्मचर्य) की रक्षा होसकेगी ? कदापि नहीं। जब आग फूस का वैर है स्पर्श होते ही सिलगती है तो भला कब सम्भव है कि समस्त अवयवों पर हाथ फिरें और वह स्त्रियां बेदाग़ बचें ? कदापि नहीं। सच तो यह है कि लाला जी, बाबू जी, सेठ जी अपने २ व्यवहार में

इतने फंसे हैं कि दूकान पर जाकर घर की खबर भी नहीं ले सकते चाहे कुछ कार्य हो वा नहीं। प्रातःकाल के निकले आधीरात को घर पर आये पड़ के सोये तो हो गया सवेरा, जा पहुंचे दूकान, लक्ष्मी और आरामतलबी के इतने दास बने हैं कि उन्हें पता तक नहीं लगता कि घर के अंदर में क्या ग़दर होता है। मित्रो! जहां इतना अंधेर खाता है वहां उलटा जमा खर्च होकर वर्णसंकर संतानें उत्पन्न होते क्या देर लगती है। शोक!

हमारे भाई जानते हुए भी इन कुचालों को नहीं रोकते। जहाँ परपुरुषों के स्पर्श मात्र से पतिव्रताओं को बचना लिखा है वहां आज नसों को दबा कर कुलन मिटवाई जाती है; मल मल कर मैल छुटवाया जाता है; शर्म! भला कहिये तो सही वह कौनसा स्थान है जहां नौकर से बचाव रहता हो? जब सारा जीवन यही नित्य कर्म है तो किस प्रकार व्यभिचार की रोक हो सकती है फिर तुर्रा यह कि इन बातों का पता भी पुरुषों को चल जावे तो भी उनकी शक्ति नहीं है जो उन्हें वह नौकरी से

पृथक् कर सकें। घर में बहू जी चाहें तो दिन में तीन नौकर बदलें अन्यथा जो मुसटंडा उनके पसन्द आगया वही यह कह कर कि यह काम बहुत अच्छा करता है रख लिया जाता है वही उनके हर समय साथ है। किसी के घर जावें तो भी वही साथ है। घर के कार्य में वही उनका दाहिना हाथ है श्रृङ्गार समय वही वस्त्र पहिनाता है मेले ठेले आदि में वही रक्षक कहाता है। कहां तक गिनाऊं दुनियाँ के सारे कार्य बहू जी के वही पूरा करता है। उनके पति भड़वे घांची की घानी के चारों ओर बैल की भांति आंखों पर पट्टी लगाये घूमा करते हैं और स्त्रियों के दास बनकर रहते हैं और जिस प्रकार घर की गुरनी नाच नचाती है कठपुतली की भांति नाच नाचते हैं अन्यथा क्या मजाल जो इतना अंधेर हो और उन स्त्रियों का पतिव्रत नष्ट होने की बारी आवे यह हमारे भाइयों का ही दोष है जो इस ओर सुधार नहीं करते उचित है या तो उसे सुशीला पत्नी बनावें या पति बनने का दावा ही छोड़दें तो दूसरी कुछ व्यवस्था सोची जावे। आशा है

हमारे भाई इस बेहूदा चाल को उठादेंगे कहारों की स्वतंत्रता घर में न बढ़ने देंगे। आवश्यकता होने पर स्त्रियों के पास स्त्रियों से काम करा चौथे व्रत की रक्षा में दत्तचित्त होंगे।

स्याने भगत भोपे और मिथ्या पूजन

हज़ारों की रेड़ इसी में जाती है। मिथ्या पूजन के कारण अनेक दुराचारिणी बनजाती हैं उन स्त्रियों को अविद्या के कारण यह पता नहीं है कि वह मनुष्य किस प्रकार धोखा देते हैं। वह बेचारी अज्ञानवश पुत्र के लालच में पड़कर उनके फंदों में जा फंसती हैं। माता शीतला गुडगावेंवाली कुवेवाली, मीरा जाहर पीर आदिक को पुत्र प्राप्ति हेतु जात देती धक्के खाती इज्जत गमाती फिरती हैं। पुत्र प्राप्ति के लालच स्याने दिवाने भगत भोपों के जाल में आकर नाना प्रकार के नाच नाचती हैं चाहे उनका पतिव्रत धर्म भी नष्ट हो जावे इसकी उनको परवा नहीं पर किसी प्रकार पुत्र मिलजावे इसकी चिन्ता में रहती हैं। हर समय आठ पहर चौंसठ घड़ी वही पुत्रप्राप्ति

का भूत सवार है ठगियों के इसी में ही पौबारे हैं फ़िर तो वह यंत्र मन्त्र की चाल बता कामी जन अपनी चाल पूरी करही लेते हैं। क्या हमारे भाई इन सण्डे मुसण्डों से बढ़ता हुआ व्यभिचार नहीं रोक सकते, क्या सचमुच इस मिथ्या पूजा से पुत्र प्राप्ति होसकती है? कदापि नहीं, प्रसिद्ध कहावत है:—

भोली दुनियां बावली पूजे सती ऊत।
वोही निष्फल मरगये किस को देंगे पूत॥

जो स्वयं अपवा तस्कर जलमरे पापों के उदय से भूत प्रेतादि योनियों में स्वयं ही भटक रहे हैं वे दूसरों को क्या पुत्र दे सकते हैं? पुत्र उत्पन्न होना वा न होना जीना व मरना सब कर्मों के आधीन है पर बहुत सी स्त्रियां इन ठगों के जाल में आ ही जातीं हैं। यह लोग भी बड़े ही मक्कार होते हैं आवे जावे कुछ नहीं पर औषधि हर रोग की करने को उद्यत हैं। किसी के सिर मीरां आता है तो किसी के सदार किसी के ज़ाहर पीर तो किसी के भावड़ियां। कहां तक गिनाऊं पेटार्थी लोगों ने

अनेक तुतम्भे बांध रक्खे हैं, भोले भाले स्त्री पुरुषों को ठगने का धंधा लेबैठे हैं इनमें अधिकांश दुराचारी होते हैं और इसी ओट में अपना काम बना लेते हैं । भोली स्त्रियां इन चालों को नहीं जानती और फंसजाती हैं । किसी का लड़का नहीं जीता और रोगी है तो इन्हीं का सहारा ले इन के घरों पर जाना व इनको अपने घर पर बुलाना यहां तक कि घरकों को भी दुखित कर देती हैं । यह ठग कुछ जानते हुए तो घास फूंस दे गये वा फूंक मारी उतारा बता दिया किसी ने १।) उठाना उठवा दिया और इधर उधर की बातें बताये चलदिये लो होगई औषधि । मूर्ख यह नहीं जानते कि जिसने डाक्टरी पास नहीं किया वैद्यक और हिकमत के पास तक फटका नहीं लगोट बंद नहीं है वह क्या खाक चिकित्सा करेगा ? पर शोक है कि वैद्य डाक्टरों को छोड़ इधर उधर मारी भटकती फिरती हैं और व्यर्थ में अपना शील उन पापियों द्वारा कलङ्कित कराती है । बहुत सी स्त्रियां ही कुटिला होती हैं जो भूत प्रेत का झूठा बहाना कर नाच कूद उन्हीं

दुराचारियों को बुला लेती है अतएव मित्रो ! चेतो और इन दुराचारी सण्डे मुसण्डों के जाल से सन्तति को बचावो जहां तक हो इन ठगों के पास तक मत फटकने दो, बीमारी की औषधि अच्छे वैद्य हकीम डाक्टरों से करावो आरोग्य लाभ औषधि से होगा इन व्यभिचारियों से कुछ भी नहीं इस वास्ते इन कुचालों को बन्द कर ब्रह्मचारी प्रथायें चलावो जिससे देश का कल्याण हो ।

विवाह में अश्लील सिलोका और छन्द ।

पहिले किसी समय में विवाह के समय वर की विद्या की जांच करने के वास्ते उसकी सास आदि श्लोक वा छन्द कहला कर उसको कुछ आभूषणादि द्रव्य देती थीं जिस से उसका सत्कार भी होजाता और साथ ही विद्वत्ता का भी पता लग जाता था पर वह प्रथा आज कल इतनी बिगड़ी कि श्लोकों के स्थान तो सिलोके रह गये जो पश्चिम में मारवाड़ादि देश में उसी समय कहे जाते हैं और पूर्व में छंद की जगह छन कहे जाते हैं जो इतने अश्लील और

भद्दे होते हैं कि कहने सुनने वाले सभी पर बुरा प्रभाव होता है नमूने मात्र ढका हुआ छन सुना भी देता हूँ।

छनपकैया छनपकैया छन पकौरी-बर्क़ा।
आती जाओ देती जाओ तुम छिनाल पर्क़ा॥

लीजिये महाशयो यह तो ढका छन है जिस में सास आदि सर्व परिषद् को वर छिनाल का बहुमान उपाधि (खिताब) देता है। कहिये छिनाल का प्रमाण-पत्र किसे मिलता है? आप ही समझ लीजिये जब ढके छनों का यह हाल है तो आगे का कहना ही क्या है। मित्रो! वह कोरे लच्छेदार तुकबंदी के सुनाते हैं कि जो सभ्य पुरुष के मुख से नहीं निकल सकते पर वहां वह आनन्द से उन्हीं का प्रचार है। यदि कोई सभ्यता के साथ शास्त्रोक्त कहे भी तो उसे नापसंद करती हैं किन्तु उलटा दुलहा को उस परीक्षा में अनुत्तीर्ण (नापास) कर देती हैं झट कह देती हैं यह कुछ जानता ही नहीं। वाहरे समय ठीक है भैंस के सामने मृदंग बजाने से क्या लाभ? उनके सामने तो वही गन्दे छन कहें तो पास का प्रमाण-

पत्र मिले। धन्य है काल की दशा, सभी व्यभिचार रंग में रंगे हैं। योंही तुकबंदी मारवाड़ में चलती है धर्म का वहां भी पता नहीं उन्हीं व्यभिचारी तुकवन्दियों से राजी हैं कि जिसको सुन २ कर संतान भी दुराचारी वन जावें, उस परिषदा की भी रंगत पलट जावें, शोक! खूब नवीन ढांचा स्वीकार कर क्या दुष्टाचार का प्रचार किया, देश में व्यभिचार को फैलादिया। मित्रो! याद रखिये यदि इन प्रणालियों को न सुधारोगे तो स्मरण रहे एक दिन ढूंढ़े से भी ब्रह्मचारी न मिलेगा और धर्म रसातल को पहुंच जावेगा इसलिये अभी से चेतो और इन कुचालों को मिटाकर सभ्यता का प्रचार करो जिससे व्यभिचार का सत्यानाश होकर वीर्यरक्षा हो।

पासेवान वो गोलियां रखना

बहुत से नगरों में देखा जाता है कि धनाढ्य लोग दस बीस पचास जितनी जिसको रुचें स्त्रियां नौकर रखते हैं उन को कहीं गोली कहीं डावरी कहीं पासेवान

कहते हैं और उनसे दुराचार भी सेवते हैं नहीं समझ में आता कि हमारे देश में धनाढ्यों को इन कुचालों की धुन क्यों सवार है। क्या विकारशांति को स्त्री थोड़ी है ? यदि कहाजावे गृहकार्य वास्ते रखते हैं तो यह सफेद झूंठ है क्योंकि घर के जितने पुरुष हैं सब की दो २ चार २ घंटी रहतीं हैं यह सेठजी की गोली वह कुंवरजी की वह कुंवर सा की पासेवान इत्यादि भला इस बंटवारे (तक़सीम) का क्या प्रयोजन ? यदि कहा जावे राजे महाराजे धनाढ्य लोगों का काम है तो यह भी धोखे की टट्टी है। किसी भी धर्मशास्त्र ने इन बातों की आज्ञा नहीं दी और न उनके पुत्रों का अधिकार विवाहिता स्त्री के पुत्रों के समान माना जाता है इसी से सिद्ध है कि यह रीति महा अधर्म की खान है। दास दासियों से गृहकार्य करा सकते हो पर दुराचार निमित्त दासियाँ रखना महानीचता है इसी से देश में व्यभिचार दमा दम बढ़ रहा है क्योंकि वे बड़े आदमी अपने में खोट होने से दूसरों को भी नहीं रोक सकते जिससे भी व्यभिचार बढ़ रहा है। द्वितीय उन गोलियों की सन्तान आंगने का

चाकर समझ ग्रा थे इतना स्वतंत्र करदिया जाता है कि वर्णसंकर संतान उत्पन्न होने का नम्बर आजावे तो आश्चर्य नहीं और जो उन गोलियों से पुत्रियां होती हैं वे भी दुराचार सीखती हैं क्योंकि जिनका वीर्य है उस जाति में तो विवाह रहा होने से, नीचों से ही सम्बध होना है। शोक! उत्तम जाति के वीर्य से उत्पन्न हुई कन्याओं की यों मिट्टी पलीत हो शर्म ! शर्म !! शर्म !!! बड़े घरानों में यह कुरीतियां देख छोटी श्रेणी के मनुष्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि देखत जैसी सीखत वाली कहावत होती है संतानें यह लीला देख २ उनसे बढ़कर विषयी बन जाती हैं और अति शीघ्र धन दौलत की धूलधानी कर बैठती हैं। हजारों खानदानों का खोज इन्हीं व्यभिचारी चालों ने मिटा दिया है इस वास्ते मित्रो ! इन व्यभिचारी चालों को छोड़ कर सदाचार का प्रचार करो स्वस्त्री पर सन्तोष रख व्यभिचार का नाम तथा चिन्ह जगत् से मिटादो जिस से वीर्य रक्षा होकर तुम्हारा भवोभव कल्याण हो।

ग्रामोफ़ोन द्वारा अश्लील गायन

आजकल इसका प्रचार अधिक है बहुत से घरों में स्त्रियों और बच्चों के जी बहलाव का साधन बनगया है, विवाह शादियों में रंडी के नृत्य के स्थान में यह जाने लगा है, मेले ठेले आदि में चित्त प्रफुल्लित करने को बजाया जाता है। यदि कोई सज्जन चाहें तो इस के द्वारा अच्छे उपदेशों से लेकर और भगवत भजन के रिकार्ड सुनाकर धर्म प्रचार कर सकते हैं।

परन्तु प्रतिकूल इसके व्यभिचार का पोषण होरहा है, अधर्म अनाचार असभ्यता अश्लीलता और काम विकार जाग्रत करने वाले गायनों का प्रचार होरहा है जिसके कारण देश उन्नति के स्थान में अधोगति को जा रहा है। ब्रह्मचर्य के बदले निर्लज्जता के गायन सुन २ कर संतानें व्यभिचारी बन रही हैं। शोक है इन कुचालों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं देता परन्तु प्रतिकूल इसके लज्जाजनक गन्दे गायनों के रिकार्ड मोल ले कर घर में

लाये जाते हैं जिनको सुन २ कर स्त्री बच्चे न भी बिगड़ते हों तो शीघ्र दुराचारी बनते हैं ।

यहां तक कि छोटे बच्चे उन गायनों को कंठस्थ कर दिन भर घर में ताल उड़ाते हैं जब उनका कहना बुरा लगता है तो उनको डांटा जाता है तमाचे भी लगाते हैं पर अप ने मुंह पर स्वयं तमाचा नहीं लगाते उन हाथों पर सोटा नहीं बजाते जिनसे भद्दे रिकार्ड मोल लाये थे । दोष आपका पड़े बच्चों के सिर क्या अच्छा न्याय है । स्त्रियों की लीला ही न्यारी है उन्हें तो बहाना ही मिल गया । कब सम्भव है कि हर समय का उपदेश प्रभाव न लावे । जब रात दिन गन्दे बकवादी गायन रिकार्ड द्वारा सुनने का उनको चस्का पड़ गया तो अ- सली चस्का क्यों न पड़ेगा ? शर्म ! अवश्य ही दुराचार का प्रवेश होगा । कदापि सम्भव नहीं कि दुराचारी गायनों से सदाचार सीखें । उचित है इस का शीघ्र बायकाट करो, घर में जितने रिकार्ड अधर्म के संग्रह किये हों तोड़ डालो, आगामी को ऐसे गन्दे रिकार्डों

का मोल लेना बन्द करो किन्तु अन्य स्थान पर भी सुनने तक से पृथक् रहो और सन्तति को इन कुमार्गों की आहुति से बचाओ जिससे व्यभिचार का द्वार बन्द होकर वीर्यरक्षा का प्रचार हो।

पति का परदेश में रहना

बहुधा देखा जाता है कि पुरुषवर्ग अपनी स्त्रियों को देश में छोड़ परदेश व्यापार निमित्त निकल पड़ते हैं और वर्षों वहीं घूमे जाते हैं यह बड़ा अनर्थ करते हैं। व्यापारनिमित्त, नौकरीनिमित्त, विद्यानिमित्त बाहर निकलना दोष नहीं है पर सीमा के भीतर रहकर। यह नहीं कि पीछे का ध्यान ही नहीं, अपनी कमाई में मग्न हो वहीं फंसे पड़े रहें आपत्तिकाल में विशेष दिन होजावें यह विवशता है पर आपत्तिकाल न होने पर यह रीति कदापि श्रेष्ठ नहीं है। अनेक स्त्रियां इसी कारणवश दुराचार के चक्कर में पड़जाती हैं। पति का पत्र परदेश से आता है जो बेचारी पढ़ो नहीं परपुरुष से पढ़ाने जाती हैं, घर

में दूसरा न होने से स्वतन्त्र भ्रमण करना पड़ता है और कङ्गाली अवस्था में अपना घ नष्ट होने पर दूसरों के घर वास करना पड़ता है, अनेक दूषणों की खानें बन जाती हैं । जो स्त्री के स्वाभाविक दूषण हैं वे सभी दिख जाते हैं । कहा भी है —

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम् ।
स्वप्नश्चान्यगृहे वासो नारीणां दूषणानि षट् ॥

[हितोपदेश मित्रलाभ श्लोक ११५]

अर्थः—मद्यपान, परपुरुष के साथ मिलाप, पति से जुदाई, स्वतन्त्र भ्रमण और दूसरे के घर में सोना तथा रहना यह छः स्त्रियों के दूषण हैं ।

अतएव मित्रो ! सावधान हो देश की दशा सुधारो, पहले का सा समय नहीं है विश्वास के वशीभूत हो सारी लगाम स्त्रियों के हाथ मत दो, विद्वानों की सम्मति इस के प्रतिकूल है । यद्यपि हमारा देश निर्धन है और एक प्रकार इस देश के लोगों पर विपत्तिकाल आरहा है तो भी भाइयो जहां तक हो ऐसी कुप्रथाओं को उठा दो,

न्यून व्यय करो, मोटे वस्त्र पहरो, घटिया भोजन खाओ पर जैसे बने इन अनर्थों को घटावो द्रव्य कमाना है तो शिल्पकारी की उन्नति करो नवीन वस्तुयें उत्पन्न (ईजाद) करके धन कमावो मानहानि कराकर दासता की ओर ध्यान मत दो गरीब से गरीब किसान तक इस बात को पसन्द नहीं करता वह कहता है:—

"बैना चोरी चाकरी हारा करे किसान."

मित्रो ! सोचो क्या उन लोगों का ध्यान है बैना बोना चोरी करना व गुलामगीरी करना जब किसान हारता है तब करता है क्योंकि उनका कहना है:—

कर्ज़ दे न यारो, कर खाओ चिलम बरदारी।

इस वास्ते दोस्तो जहां तक हो उच्च कोटि के व्यापार और धन कमाने के धंधे करो, और स्त्रियों को दुराचार सीखने का अवसर न दो जिससे देश का कल्याण हो (वीर्यरक्षा हो।

बुरी संगति।

बहुधा स्त्री पुरुष इसी बुरी संगति के कारण दुराचारी बनते जाते हैं अथवा प्रथम से ही कुसंगति के प्रताप

से कुशीलताके मैदान में उतर जाते हैं। बाल्य अवस्था में ही नाना प्रकार से वीर्य क्षीण करके हकीम डाक्टरों के आधीन हो जाते हैं। माता पिता परिवार की असावधानी के कारण ही अनेक सन्तानों का सत्यानाश होता है। यह जानते हुए भी कि नीच मनुष्यों की संगत से हमारी सन्तान अवश्य बिगड़ जावेगी पर प्रेम वा अन्य किसी कारण से रोकने में असमर्थ हैं किन्तु अन्तमें जब मर्यादा को दाग़ लगता है तब हाथ मल पछताते हैं वास्तव में उनपर गहरी दृष्टि न रखने से ही भयंकर परिणाम हैं। इस कुचाल की गति सर्व कुचालों से विलक्षण है और कुचालों को रोकना इतना कठिन नहीं है जितना इस कुमार्ग को रोकना। इस में हरसमय दृष्टि रखने की आवश्यकताहै। सखा (यार) सखी (सहेली) के बहाने गुप्त अनाचार होते हैं कि जिसको लिखते हुए छाती कांपती है पर हमारे देश के मनुष्य इधर ध्यान तक नहीं देते।

बहुत सी कुटनियाँ यही पेशा करती हैं बड़े बड़े शहरों

में एक दूसरे के मिलने जानेके बहाने से सैकड़ों गुप्त अनाचार होते हैं इसके अतिरिक्त कहार डोली उठाने वालों तक से मिले रहते हैं। अपने सम्बन्धी के घर जाने के वहाने यार के घर पहुंचती हैं। बहुतसी सहेलियाँ दुराचारिणी होती हैं तो उनके घर पहुंच कर यार को बुलालेती हैं या वह स्वयम् आकर उसके द्वारा उसे बुलाताहै अनेक दलालों द्वारा भी वार्तालाप होता है बहुत सी कुटनियां इसी पेशे की कमाई खाती हैं। उन्होंने एक खाली मकान किराये पर ले इसी कामकी दुकान खोली हुई है जिसको अड्डे कहते हैं वहां भी अनेक अच्छे घरानों के स्त्री पुरुषों के शीलव्रत का नाश होता है।

इत्यादि अनेक बातें हैं इन सब पर विचार करने से यही प्रतीत होता है कि इन कुमार्गों में प्रवेश होने में प्रथम किसी कुशीलिये का सङ्ग (सम्बन्ध) अवश्य होता है स्त्रियों को कुटनियां पुरुषों को उनके दुराचारी मित्र एक बार प्रथम वही फंसाते हैं अतएव सब से पूर्व दुराचारियों की सङ्गति ही त्यागना चाहिये उनसे

परिचय (मेल मिलाप) ही न बढ़ाना चाहिये, न सन्तति को उनके पास फटकने देना चाहिये अन्यथा एक न एक दिन रंग आही जावेगा इस पर एक मारवाड़ी कहावत भी है कि:—

कालियेरे पासे धोलीगो बैठे ।
वर्ण नी बटावे तो लक्खण लावे हो लावे ॥

अर्थात् काले पुरुष के पास गौरवर्ण का पुरुष बैठे तो चाहे रंगत में अन्तर न पड़े पर उसके लक्षण अवश्य आही जाते हैं इस वास्ते मित्रो ! कुशीलियों का साथ छोड़ो अन्यथा कुशीलियों की सङ्गति एक न एक दिन अवश्य कुशीलता सिखावेगी क्योंकि "तुख्म तासीर सोहबत का असर" आही जाता है बहुधा देखा जाता है कि बड़े २ घरानों के लड़के कुकर्मी होजाते हैं क्या कारण है ? यही तो कारण है बच्चे अपनी दृष्टि से हटाकर नीचों की सङ्गतिमें पलते हैं दुराचारियों के साथ खेलते हैं बहुधा तो नौकर ही दुराचारी होते हैं वो यह जानकर कि सुशील होगा तो हमें क्या लाभ पहलेसे ही कुशीलता सिखाते हैं

कोई सुशील नौकर है तो साथी लड़के लड़की कुशील मिल जाते हैं जिनके द्वारा सन्ता बिगड़ जाती है। एक बदकार लड़का या लड़की है दूसरी उसके घर जाती है वह भी वहां से मजाणफल ले आती है। पूछें तो कहें सखी से या यार से मिलने गये थे पर यह कोई नहीं पूछता कि यह नित्य का मिलना भीतर ही भीतर क्या काम कर रहा है। बच्चों को कहाँ तक स्वतंत्रता देनी और बुरी सङ्गत से उन्हें कैसे बचाना और स्वयम् भी कुशीलियों से पराङ्मुख रहना कोई नहीं जानता। शोक कुत्तियों और कुत्तों की रक्षा और सन्तति की लापरवाही वाहरे! ज़माने। भाइयो! अब समय सोने का नहीं है व्यभिचारियों के फंदे से स्वयम् बचो और सन्तान को बचाओ जिससे व्यभिचार का मूलोच्छेद होकर वीर्य रक्षा हो।

शिशुकेलि।

यह सृष्टिविरुद्ध महाभयकर प्रथा भी इस देश में बढ़ चली है। अनेक मनुष्य इस कुचाल में फंस गये हैं पुलिस

रात दिन ताक में रहती है तो भी इन पापियों का अन्त नहीं होता। प्रसन्नता और बलात्कार दोनों ही प्रकार के मुक़दमे अदालत तक जाते हैं और पापी अपने पाप किये की सज़ा पाते हैं तो भी अधर्मी अपने कुकर्मों से नहीं चूकते। वास्तव में देखा जावे तो लड़कों को इस कुचाल में प्रवृत्त होने में रक्षा (गारडियन) करने वाले परिवार के लोगों की आसावधानी मुख्य कारण है बच्चों को पैसे देने में लापरवाही करते हैं, उनकी आवश्य कता को देखकर नहीं देते। यदि उनको आवश्यकता से कम दिया जाता है तो वह दूसरे लड़कों से उधार खाता है और अधिक पैसे दोगे तो वह अन्य लड़कों को माल खिलावेगा, बस जो जिसका माल खाता है उसके फन्दे में आही जाता है। इससे उचित है कि बच्चोंको द्रव्य उन की आवश्यकता के अनुसार जांच कर दिया जावे अनेक लड़के खेल तमाशे मैच आदि के बहाने घर वालों से छुट्टी लेकर यार लोगों के साथ अनाचार करते फिरते है, जिस की घर वाले सुध ही नहीं लेते। देर से भी

घर आवें तो उनका बहाना सुन शांत हो जाते हैं। यही उनका हौसला बढ़ा कर उन्हें कुमार्ग में फंसने की सहायता देना है। उचित है कि समय को विचार कर छुट्टी दी जावे अबेरी आने पर बच्चों को फटकारा जावे, जांच समय समय पर की जावे जो दोष दीख पड़े शीघ्र मिटाये जावें। कोई २ लड़के तो मिठाई के दौने तक घर पर लाते हैं पर घर वाले इतने अन्धे हो जाते हैं कि जांच ही नहीं करते कि मिठाई विना मतलब क्यों घर में आती है यही अन्धेरखाता बढ़ने का लक्षण है। अनेक लड़के छोटी आयु होने के कारण पाठशाला जाते आते खेलते कूदते बड़े लड़कों से सताये जाते हैं। रुपया दो रुपया के लोभ में अनेक कुकर्म सीखते हैं। कहीं कहीं अनेक बदमाश दुष्ट कुकर्मी रास्तों में खाली मकान वा अपने दोस्त के गृह के निकट लगे रहते हैं जब कभी अवसर मिला बच्चोंको फुसलाकर वा रास्तेमें किसी व्यक्ति की न देख जबरन उठा लेगये और अनर्थ सेवन किया। कई नगरों में इसी बखेड़े में लड़कों की जान और माल से

भी हाथ धोना पड़ा है। प्रायः लोग इसी कर्म के लिये नौकर रखते हैं कहीं २ बाज़ारों में दस पांच लुच्चे, बदमाश जमा होकर इन्हीं बातों के दाव पेच सोचा करते हैं, रास्ते चलतों को छेड़ा करते हैं। विवाहों के विषय में पृथक लिखा ही गया है इत्यादि अनेक प्रकार से कई संताने इस कुचाल में प्रवृत्त होरही हैं। घर वालों को उचित है कि बालकों की रक्षा में दत्तचित्त रहें, उनके चाल चलन और सङ्गति पर पूरा ध्यान रक्खें, उनके प्रबंध में किंचित त्रुटि न करें। कहीं २ पर बोर्डिङ्ग हाउस सुपरिन्टेण्डेन्ट जो लड़कों की रक्षा को रक्खे जाते हैं उन में बाज़ हज़रत ही खुद इस काम में ताक़ होते हैं। मैनेजरों को इसकी सावधानी की आवश्यकता है। बाज २ टीचर भी ऐसे होते हैं जो बच्चों को नाना प्रकार से बिगाड़ देते हैं। प्रबंधकर्ताओं को इस की सावधानी रखनी चाहिये और किञ्चित भी शिकायत होने पर पूरी अन्वेषणा करके दोषी को उसका फल चखाना चाहिये। कई स्थान पर लोग बच्चों को पढ़ने के लिए बड़ी बड़ी

संस्था खोल उस का कुल प्रबन्ध साधु संन्यासी आदि एक व्यक्ति के हाथ में दे देते हैं इस कारण से भी कमेटी आदि किसी का दबाव न रहने पर वह महात्मा अपने को चिरस्थायी प्रबन्धकर्त्ता हर्त्ता समझ अनेक दुराचार फैलाते हैं अतएव उचित है कि जिस व्यक्ति को अधिकार दिये जावें नाप तोल कर ऐसे देने चाहिये जिससे अनर्थ न होसके यद्यपि सभी जगह ऐसा नहीं है परन्तु देखा देखी परिपाटी बिगड़ने के विचार से ऐसा लिखा जाता है कि सभ्य पुरुषों की दृष्टि चहुं ओर सुधार पर लगी रहे ।

इन कुकर्मों से मनुष्य निर्बल होजाता है । मकरध्वज की मात्रा खाने से भी ब्रह्मचारियों का सा तेज नहीं आता, मस्तक में विचार शक्ति नहीं रहती, निर्बलता सताती है, लोगों में अपवाद होता है चहरे पर लावण्यता नहीं रहती, कोई ऐसे कुकर्मी का मान नहीं करता जब तक पता न लगे तब तक सत्कार होता है पता लगने पर कोई पास तक नहीं फटकता । देश इन कुकर्मों के कारण

दुर्बल होता जाता है, सन्तानें बिगड़ती जाती हैं, नसल दिन प्रति दिन खराब होती जाती हैं, सन्तति प्रति सन्तति रोगों की बढ़वारी होरही है, नन्हीं २ आयु के बच्चों को गर्मी प्रमेह आदि बीमारियां आपके कुकर्मों का प्रमाण देरही हैं। इस लिये मित्रो ! अब तो होश में आवो, मतना ध॰ देश धर्म की खाक उड़ावो, इन कुटेवों को छोड़ो और सभ्यता का प्रचार करते हुवे ब्रह्मचर्य की रक्षा हेतु चित्त दो, जिससे तुम्हारा इस भव और परभव दोनों जगह कल्याण हो।

हस्तक्रिया ।

यह कामाग्नि शांत करने का ढंग सभ्यसमाज में बहुत चल रहा है। शास्त्रों में इसके बारे में बहुत कुछ लिखा हुवा है अतएव मैं इस पर विशेष न लिख कर इतना ही कहूंगा कि इस कार्य से सुस्ती आदिक अनेक बीमारियों की विडम्बना में मनुष्य फंस जाता है और सन्तान होना भी बन्द होजाता है, निर्बलता शरीर में

बढ़ती है, सुन्दरता, लावण्यता जाती रहती है, मस्तिष्क निर्बल हो जाता है, विचारशक्ति घट जाती है, अनेक दोष हैं जो इस कुकर्म से उत्पन्न होजाते हैं। अतएव मित्रो! इस कुटेव को सर्वथा त्याग दो जिससे ब्रह्मचर्य की रक्षा होकर तुम्हारा कल्याण हो।

स्त्रियों में प्रथम यावनी भाषा की शिक्षा।

अनेक स्त्रियां संस्कृत न पढ़कर इंगलिश उर्दू आदि अन्य देशों की भाषाएँ पढ़ती सीखती हैं कि जिन में सदाचार पतिव्रतधर्म और सत्यव्रंतियों के कर्त्तव्यों की विशेष पुस्तकें ही नहीं मिलतीं। वहां स्वतंत्रता भरी पुस्तकें नाबलादि कामाग्नि प्रज्वलित करनेके पुस्तक विशेष मिलते हैं जिन्हें पढ़कर स्त्रियां दुराचार सीखने के अतिरिक्त पुरुषों के बराबर अधिकार मांगने लगती हैं पर संस्कृतभाषा में यह दोष नहीं है यहां पति की आज्ञानुसार चलना ही धर्म माना गया है। स्त्रियों को किसीकाल में स्वतंत्रता नहीं दी गई और न कभी उन्होंने स्वतंत्रता चाही और यही यहांके विद्वानों की सम्मति रही जो

स्त्रियों की स्वतंत्रता लेख में दिखा चुके हैं वहां से देखिए संस्कृत ग्रंथोंमें इस विषय को खूब ही कूट२कर भरा है। यदि इस भाषाको स्त्रियें पढ़ें तो उनका चालचलन देवियों का सा होने में शंका ही नहीं है परन्तु ऐसी भाषाएँ पढ़ना कि जिन भाषाओं में इसदेश के अनुसार साहित्य ही नहीं तो कहिये इस विषय में क्या लाभ होगा ? मान लो अन्य विषय में कुछ लाभ भी हो पर अच्छे पुस्तक न मिलने से अधर्म में पड़ना संभव है और किसी २ को अधर्म में पड़ा देखकर तो लोग स्त्रीशिक्षा से ग्लानि भी करते हैं पर यह दोष स्त्रियों को पढ़ाने का नहीं पर बुरी शिक्षा देने का है इससे उचित है अपने धर्म के शास्त्र सामायिक प्रतिक्रमण आदि नित्यनियम श्रेष्ठ पुरुषों के इतिहास तात्विक ग्रंथ पढ़ावो जिससे देश में सदाचार का प्रचारहो। मैं यावनी भाषाओं की निंदा नहीं करता परन्तु उन भाषाओं में हमारे देशयोग्य स्त्रीशिक्षा के ग्रंथ ही नहीं तो हमारी त्रुटि उनको पढ़ने से क्योंकर पूरी होसकतीहै और है भी सच जब वे भाषायें इस देश की है ही नहीं तो इस

देश की आवश्यकताओं को पूरा करने का साहित्य ही उन में कहाँ से मिले ।

अतएव मित्रो ! पहिले स्त्री बच्चों को संस्कृत विद्या और धार्मिक ज्ञान में निपुण करके फिर अन्य देशों की भाषाएं पढ़ाओ जिससे वह सन्तान अपने धर्म से अपने देश से, अपने पुरुषाओं से पराङ्मुख न हो। यह प्रत्यक्ष बात है कि इंगलिश (अंग्रेजी में स्वतंत्रता और उर्दू फ़ारसी में कामविकार भरा पड़ा है उनके पढ़ने वालों में भी यह वासना आती है पर संस्कृत विद्या ही ऐसी है जिससे मनुष्य इन दोषों से बचकर सदाचारी बनता है अस्तु मित्रो ! इस भाषा का प्रचार करो जिससे देश में ब्रह्म-चर्य की रक्षा होकर भारत भूमि का उद्धार हो ।

स्त्रियों की स्वतंत्रता

यह रीति भी अन्यदेशों में चाहे सभ्यता की खान हो पर इस देश में व्यभिचार बढ़ाने में कमाल कर रही है । घर से बाहर स्त्रियों का अकेले विचरना किसी प्रकार ठीक नहीं है विशेष कर युवाअवस्था में ऐसा करना शील-

व्रत को बट्टा लगाना है। बहुधा ऐसा देखा जाता है कि भले घरों की स्त्रियां घरसे बाहर स्वच्छन्दतापूर्वक अकेली फिरती हैं, मन चाहे जिससे प्रेम बढ़ा भमेला जोड़ स्वयं दुराचार सीखती हैं। साध्वी तक को अकेले विहार करने की शास्त्रों में आज्ञा नहीं! पर अब की स्त्रियां स्वतन्त्रता पाकर मन चाहे जिधर को घूमने चल देती हैं अच्छे बुरे का ध्यान ही नहीं। नायन, धोबिन, कहारिन आदि कुट-नियों के फन्दे में आकर शील को गमा बैठती हैं इत्यादि कहां तक वर्णन करूं अनेक दूषणों से भूषित हैं। क्या यह शास्त्रानुकूल है? नहीं २ कदापि नहीं। शास्त्रों में स्त्रियों के वास्ते निम्न लिखित लेख पाये जाते हैं:—

बालत्वे रक्षकस्तातो यौवने रक्षकः पतिः।
वृद्धत्वे सति सत्पुत्रः स्त्री स्वाधीना भवेन्नहि ॥४॥

श्रीमान् हेमचन्द्राचार्य्य रचित अर्हन्नीति सन् १६०६
की छपी पृष्ठ २४३।

अर्थ—बाल्यावस्था में पिता, तरुणावस्था में पति और

वृद्धावस्था में श्रेष्ठ पुत्र स्त्री का रक्षक है क्योंकि स्त्री को स्वाधीन होना उचित नहीं।

मित्र वरो! विचार कीजिये उपरोक्त महात्मा क्या बतलाते हैं, क्या अब भी स्त्रियों को स्वतंत्र बनाकर देश में दुराचार बढ़ाओगे? और भी प्रमाण सुन लीजियेः—

पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने।
रक्षति स्थाविरे पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥ ३ ॥

मनुस्मृतिः सन् १९०६ की छपी पृष्ठ ६६४

भावार्थ—बाल्यावस्था में स्त्री की रक्षा पिता, युवा अवस्था में पति वृद्ध अवस्था में पुत्र करते हैं इससे स्त्री कभी स्वतंत्र रहने के योग्य नहीं है।

और भी लीजिये एक विद्वान् लिखते हैं किः—

स्वातन्त्र्यं पितृमन्दिरे निवसतिर्यात्रोत्सवे सङ्गति-
र्गोष्ठी पूरुषसंनिधावनियमो वासो विदेशे तथा ॥
संसर्गः सह पुंश्चलीभिरसकृद्वृत्तेर्निजायाः क्षतिः—
पत्युर्वार्द्धकमीर्षितं प्रवसनं नाशस्य हेतुः स्त्रियाः ॥

(हितोपदेश, मित्रलाभ श्लोक ११४)

अर्थः—स्वतन्त्र होना, सदैव पिता के घर में रहना मेलों पर जाना पुरुषों के बीच रहना, नियम (क़ायदे) को तोड़ देना तथा परदेश में रहना दुराचारिणी स्त्रियों के साथ मिलगत, बार बार अपने चाल चलन को बिगाड़ना, पति का बूढ़ा होना और अपनी सौकनों इत्यादि से जलना तथा पति का सर्वदा परदेश में रहना इतनी बातों से स्त्रियां ख़राब हो जाती हैं।

कहिये अबतो सभी मतों के प्रमाण मिलते जाते हैं। कहो अबतो छोडोगे वा घर की गुरुनी के गुरुमन्त्र के वशीभूत हो पुरानी लकीर के फ़क़ीर बन के स्त्रियों को स्वतन्त्रता दे दुराचार बढ़ाये जावोगे ? उचित है मित्रो ! स्त्रियों की आज्ञा के दास बनना छोड़ पुरुष कहलाने की योग्यता सीखो और शास्त्रानुकूल रीति प्रथाओं को सुधारते हुये सदाचार की उन्नति करो और व्यभिचार के कारणों का मूलोच्छेदन करते हुए ब्रह्मचर्य्य की रक्षा करो जिससे यह भव और परभव दोनों जगह कल्याण हो॥

॥ शेष फिर कभी ॥

ॐ

श्री आत्मानन्द जैनपुस्तक प्रचारक मंडल की

विक्रयार्थ पुस्तकें ।

४) जैन तत्वादर्श
३) तत्व निर्णय प्रसाद
२॥) अज्ञान तिमिर भास्कर
॥=) सम्यकत्व शल्योद्धार
१) चिकागो प्रश्नोत्तर
॥) श्री जैन धर्म विषयक प्रश्नोत्तर
।=) विविध पूजा संग्रह
।) श्रीजैनमत वृक्ष
=) जैन धर्म का स्वरूप
≡) जैन गायन संग्रह
)॥ स्नात्र पूजा
।-) श्री आत्मवल्लभ जैन स्तवनावली
॥) पूजा संग्रह
१) पूजा तथा स्तवन संग्रह
।-) जैन भानू (१ म भाग)
-) व्याख्यान मौक्तिक

१॥) ढूंढक हृदय नेत्रांजन
॥।) हंस विनोद
।=) कुमार पाल चरित्र
।=) मृगाङ्क लेखा (साचित्र)
॥=) विमल विनोद
=)॥ जैन तत्वसार
॥।=) विज्ञप्ति त्रिवेणी
१) „ „ सजिल्द
१) कृपारस कोष
।=) दयानन्द कुतर्क तिमिर तरणि
।) मूर्त्ति मंडन
-) ही और भी पर विचार
)॥ व्याख्यान देहली
-)॥ व्याख्यान लुध्याना
-) अविद्या अन्धकार मार्तण्ड
१॥) कल्पसूत्र हिन्दी भाषान्तर

=) श्री उत्तराध्यन सूत्रसार
।) सामायक देवसीराई प्रतिक्रमण
।।।-) सर्वजनिकहित सातोभाग
=) सामायक देव वन्दन अर्थ सहित
≈) समाधि शतकम्
=) भद्र बाहु और कल्प सूत्र
=) भक्ताम्बर और कल्याण मंदिर स्तोत्र अर्थ सहित
॥) त्रिलोक्य दीपिका
)॥ अजितशान्ति स्तवन सटीक
)॥ सुबोध रत्न शतकम्
॥) स्वामी दयानन्द और जैन धर्म
)। नरमेध यज्ञ मीमांसा
)॥ जैनास्तिकत्व मीमांसा
-)॥ नवगृह शान्तिस्तोत्रम्
)॥ प्रातः मंगलपाठ
)॥ जैन बालोपदेश
-) तत्वार्थ सूत्राणि
)॥ पंच मंगल पाठ
)। रात्री भोजन अभक्ष्य विचार
)॥। भजन मंजूषा
)। कलयुगी देवी
-)॥ भजन पचासा
-) „ पच्चीसा
।-) सदाचार रक्षा
)॥। भजन बीसा
)॥। भजन इक्कीसा
=)॥। हिन्दी जैनशिक्षा चारोंभाग
)॥ चतुर्दश नियमावली
)। वृद्ध देव की स्तुति
-) गौतम पृच्छा
।) श्री जम्बू नाटक
॥) अंजना सुन्दरी नाटक
=) दिगम्बर तेरह पन्थियों का शास्त्रार्थ
)॥ देव परीक्षा
≡) वीत राग स्तोत्र
≡) जीव विचार
।-) नव तत्व

|=) भीमज्ञान त्रिंशका
)। माधवमुख चपेटिका
)॥ सामायक देववन्धन सूत्रविधि
)। व्याख्यान बाल गंगाधर तिलक
)॥ महर्षि गुणमाला
)। जैनमत नास्तिक मत नहीं है
)॥ गुरु घंटाल का व्याख्यान
-) ,, ,, २ भाग
)॥ ढूंढक मत के नेता को मानपत्र
।) श्रीगयवरविलास
।) देवसी राइ प्रति क्रमण
-)॥ भजन विलास
-)॥ अनमोल मोती
-)। अनमोल मोती उर्दू
)। ईश्वर का कर्तृत्व
)॥ ऋषभादि स्तवनावली
।) कर्म विपाक सूत्र
।-) कमनीय कमलिनी
३॥) जैन सम्प्रदाय शिक्षा
)॥ देवपरीक्षा
)॥ प्रतिमा छत्तीसी
-) अनुकम्पा छत्तीसी
)॥ पोसाह विधि
॥) रत्नसार भाग पहिला
-) सम्बंध सत्तरि
।) हिदायते बुतपरस्ती जैन
-) जगदुत्पत्ति विचार
)॥ जैन तत्व मीमांसा
-) जैन इतिहास
॥=) शत्रुंजयतीर्थादि प्रबन्ध
।) भारत के धुरन्धर कवि

उर्दू

।) हर्बर्ट स्पेन्सर की अज्ञेय मीमांसा
।) ,, ,, ज्ञेयमीमांसा
।) पंच प्रतिक्रमण सूत्र विधि सहित

ENGLISH BOOKS.

=) Testimony of Science

|=) Jain Historical Studies.

III) Study of Jainism

1) Master poets of India

=, Oswals and Oswals Families

१) Jainism